शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की
मासिक पत्रिका

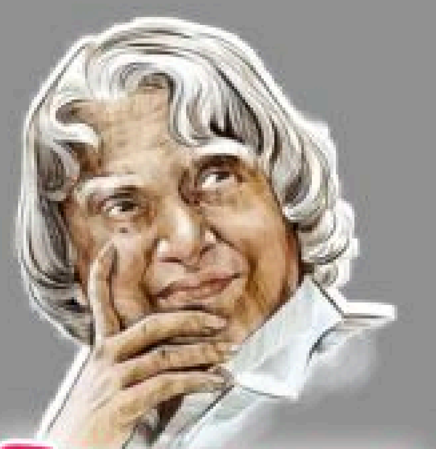
शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

वर्ष-३, अंक-९

माह : मार्च २०२१

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ।

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष- ३
अंक- ९
माह- मार्च २०२१

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन

प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

ज्योति कुमारी

आनन्द मिश्र

सह-सम्पादक

डॉ० अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक्स एवं डिजाइन

जितेन्द्र कुमार

विशेष सहयोगी

अर्चना पाण्डेय

रीना (झाँसी)

शुभकामना सन्देश

शिक्षण संवाद

गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि "शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचनाएँ ही नहीं वरन हमारे जीवन और सम्पूर्ण सृष्टि में तादात्म्य भी स्थापित करती है।" शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली एक प्रक्रिया है। मनुष्य जीवन से मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। बच्चों के सीखने की प्रक्रिया उसके घर से ही शुरू हो जाती है। बच्चा जब घर से निकलकर विद्यालय पहुँचता है तो वहाँ पर उसे अधिक सीखने और पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है। विद्यालय में शिक्षक बच्चे को अपने ज्ञान और कौशल के अनुसार बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं। शिक्षकों के ज्ञान और कौशल को निखारने में अनुभव, प्रशिक्षण और विभिन्न प्रकार की पुस्तकों की अहम् भूमिका रहती है।

मिशन शिक्षण संवाद द्वारा ऐसे ही क्रियाकलाप किये जा रहे हैं जिनसे अध्यापक और छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। मिशन शिक्षण संवाद की इस पहल को मैं सराहना करता हूँ। मासिक पत्रिका के प्रकाशन हेतु हृदयतल से शुभकामनाएँ और बधाई।

रवि प्रताप सिंह,

राष्ट्रीय आई० सी० टी० पुरस्कार प्राप्त,

प्रधानाध्यापक,

जनपद- गोण्डा।

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

जिस प्रकार वट वृक्ष की जड़ें इतनी विशाल और गहरी होती हैं कि वह हजारों वर्षों तक अपने उपयोगी होने के विश्वास को बहुत ही मजबूती के साथ विषम से विषम परिस्थितियों में भी बनाकर रखता है। लेकिन यदि वही वट वृक्ष जब अपने जीवन के संघर्ष और उपयोगिता को बनाये रखने के प्रयास को छोड़ देता है तो निश्चित ही प्रकृति में वह अपना विश्वास और उपयोगिता को खोकर नष्ट हो जाता है। ठीक इसी तरह हम सभी शिक्षक मानव समाज में वट वृक्ष की तरह हर सम-विषम परिस्थितियों में अपने विश्वास और उपयोगिता को बनाये रखने में सक्षम हैं। लेकिन यदि उस विश्वास और उपयोगिता को बनाये रखने के प्रयास को हम छोड़ देते हैं तो प्रकृति हम सभी के सामाजिक विश्वास एवं उपयोगिता को नष्ट कर देती है। मिशन शिक्षण संवाद परिवार भी शिक्षक के सम्मान, विश्वास और उपयोगिता को बनाये रखने के लिए समय, हालात, परिस्थितियों के बीच सतत कुछ न कुछ प्रयास करता रहता है। इन्हीं प्रयासों के बीच मिशन शिक्षण संवाद परिवार आपके लिए "शिक्षण संवाद" नाम की प्रत्येक माह आप सभी के प्रेरक और अनुकरणीय सकारात्मक कार्य, व्यवहार और विचारों को मासिक पत्रिका के रूप में आपसी सीखने-सिखाने और शिक्षक शब्द के सम्मान, विश्वास और उपयोगिता बनाये रखने के लिए संकलन करके प्रस्तुत करता है।

आशा है हम सभी इस सीखने-सिखाने के शिक्षण संवाद को मासिक रूप में स्वयं पढ़ कर एवं अपने सहयोगी शुभ चिंतकों को पढ़ाकर जरूर लाभान्वित करेंगे।

इस अंक में आपको क्या अच्छा लगा? क्या और अच्छा किया जा सकता है, पत्रिका पढ़ने के बाद अपना फीडबैक जरूर दें आपके दो शब्दों का फीडबैक पत्रिका टीम को हजार शब्द लिखने की शक्ति और साहस प्रदान करता है।

सहयोग के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषयवस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	1
अनमोल रत्न	2
विचारशक्ति-1	4
विचारशक्ति-2	9
Women Empowerment	12
बाल कविता-1	14
बाल कविता-2	15
टी. एल. एम. संसार	17
English medium diary	18
प्रेरक प्रसंग	19
बाल फ़िल्म	21
बाल कहानी	23
खेल विशेष	26
योग विशेष	30
शैक्षिक तकनीकी	32
सद्विचार	34
शैक्षिक नवाचार	36
गतिविधि	38
शिक्षागीत	40

मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद

देखो-देखो मिशन चला
लेकर सबको साथ चला,
शिक्षा के उत्थान में रचने
एक नया इतिहास चला..

मिशन का है ये ही सपना
हर बच्चा पढ़े अपना,
नई-नई विधियों से पढ़ाना
शिक्षा को रोचक है बनाना...

विचारशक्ति का मंच है देता
विचारों को नई पहचान,
शिक्षक में भी कवि छिपा है
ये बात ली सबने जान...

दैनिक कार्य में मिलता है
नित बच्चों को ज्ञान नया,
जानकारी बच्चों को कराता
गढ़ने को आयाम नया...

नए-नए टी.एल.एम. बनाते
विषयों को आसान बड़ा,
खेल-खेल में बच्चे पढ़ते
पढ़ने में आता है मज़ा...

तरह-तरह की कविताएँ
तथ्यों को सरल बनातीं हैं,
जटिल विषय भी आसानी से
याद हमें करवाती हैं...

मिशन शिक्षण संवाद से जुड़कर
एक नया परिवार मिला,
एक कड़ी में बाँधा इसने
न कोई छोटा न ही बड़ा।।

खुशबू गुप्ता,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय भदोई,
विकास खण्ड-सरोजनीनगर,
जनपद-लखनऊ

माह के अनमोल रत्नों को नमन

५०२- विवेक कुमार शर्मा, प्राथमिक विद्यालय भरावन प्रथम, विकासखंड - भरावन जनपद-हरदोई, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/01/blog-post_97.html

५०३- अर्चना सिंह (स०अ०), प्रा० वि० लखनीपुर, मुजेहना, गोण्डा, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/01/ps-lakhnipur-mujehna-gonda.html

५०४- शशि रानी सिंह (प्र०अ०) प्राथमिक विद्यालय गौढिया खुर्रम, नगर क्षेत्र, बरेली

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/01/blog-post_85.html

५०५- शैलेन्द्र यादव (प्रधानाध्यापक) प्रा०वि०आनन्दडीह, विकास खण्ड - अभोली जनपद -भदोही, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/01/blog-post_453.html

५०६- दलीप सिंह भाकुनी रा.उ.प्रा.वि. बद्रीनाथ ब्लॉक-गरुड़ जनपद-बागेश्वर, उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/01/blog-post_381.html

५०७- राजनाथ द्विवेदी मॉडल जूनियर हाईस्कूल सरैयां लालपुर ब्लाक-मैथा, जनपद- कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/01/blog-post_827.html

५०८- शबीना परवीन (राष्ट्रपति पुरूस्कार प्राप्त शिक्षिका) पूर्व माध्यमिक विद्यालय कांधरपुर, क्यारा, बरेली, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/02/blog-post_57.html

५०९- रवि शंकर प्रा0वि0 जामिरा ब्लॉक - मऊ, जनपद - चित्रकूट राज्य - उ0प्र0

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/02/blog-post_2.html

५१०- उमा सिंह कंपोजिट विद्यालय सालारपुर, विकासखंड - डिलारी, जनपद - मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/02/blog-post_5.html

५११- मीनाक्षी नेगी राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सल्या, ब्लॉक - ऊखीमठ, जनपद- रूद्रप्रयाग, उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/02/blog-post_6.html

५१२- कुलदीप कुमार (इं0प्रधानाध्यापक) उच्च प्राथमिक विद्यालय (कंपोजिट), एग्राह विकास क्षेत्र- डिलारी, जनपद -मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/02/blog-post_55.html

विचारशक्ति- 1

प्रमोट प्रणाली से विद्यार्थियों का भविष्य किस दिशा में जाएगा?

शिक्षण संवाद

धरा पर प्रत्येक जीव का जीवन अनमोल है और प्रत्येक जीव अपने जीवन काल में विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं से गुजरते हैं तथा प्रत्येक जीव को विभिन्न प्रकार के संघर्ष भरे रास्तों से पार करना होता है और यही सिलसिला चलता रहता है। पिछले एक साल से दुनिया भर में वैश्विक महामारी COVID-19 ने अपने पैर टिकाए रखे हैं। इन परिस्थितियों में जिंदगी से बढ़कर कोई परीक्षा नहीं होती है, लेकिन बिना परीक्षा बार-बार प्रमोट करने का बड़ा असर भी इन विद्यार्थियों के भविष्य पर पड़ेगा।

कुमार जितेन्द्र "जीत" के ऑनलाइन सर्वे और विश्लेषण के आधार पर जानते हैं कि कितनी नुकसानदायक होगी प्रमोट प्रणाली-

1. प्रमोट प्रणाली से विद्यार्थियों का मानसिक स्तर कमजोर होगा :-

हाल ही में कुमार जितेन्द्र "जीत" द्वारा एक ऑनलाइन सर्वे के आधार देश भर से प्राप्त आकडों एवं तथ्यों के आधार पर पाया कि बार-बार प्रमोट प्रणाली से विद्यार्थियों के मानसिक स्तर पर गहरा प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन नियमित रूप से की गई मेहनत को जब धक्का लगता है और खुद को एक प्रमोट विद्यार्थी के रूप में जैसे ही ये अनोखे शब्द कानों में सुनने को मिलते हैं तो अधिकांश विद्यार्थियों में निराशा देखने को मिली है। यही स्थिति अगर आने वाले समय में और देखने को मिली तो विद्यार्थियों में मानसिक तनाव उभर कर सामने आएगा।

2. स्थानीय परीक्षाओं पर भी दिखेगा असर :-

विद्यार्थियों की जिंदगी से बढ़कर कोई परीक्षा नहीं होती है। लेकिन उनके भविष्य को एक मजबूत आकार देने के लिए प्रमोट प्रणाली बिल्कुल ठीक नहीं है। प्रमोट प्रणाली से विद्यार्थियों के प्रत्येक स्तर पर कुछ न कुछ असर तो जरूर देखने को मिलेगा जिससे

विद्यार्थियों का आधारभूत स्तर यानी नींव कमजोर होती दिखाई देगी जैसे कक्षा 6 के विद्यार्थी दो साल से प्रमोट होकर कक्षा 8 वीं में तथा कक्षा 8 वीं के विद्यार्थी दो साल में प्रमोट होकर कक्षा 10 वीं में पहुँच गए हैं। अब अगले सत्र में उनका सीधा मुकाबला बोर्ड कक्षाओं से होगा। दो बार लगातार प्रमोट होने से पिछले दो साल के पाठ्यक्रम के समझने की कमी विद्यार्थियों को जरूर प्रभावित करेगी और बोर्ड पाठ्यक्रम को मजबूत आकार देने के लिए पिछले आधार स्तंभ को समझना जरूरी होता है। जो अब मुशिकल लगेगा क्योंकि अल्प समय में एक से अधिक कक्षाओं का पाठ्यक्रम एक साथ पूरा नहीं किया जा सकता है जिससे विद्यार्थियों की नींव भविष्य में डगमगा सकती है।

3. समझें बोर्ड परीक्षाओं का महत्त्व :-

कक्षा 10 वीं बोर्ड होना जरूरी है क्योंकि विद्यार्थियों को कक्षा 10 वीं के अंकों के आधार पर मिलने वाले फायदों पर भविष्य में होगा असर। वहीं कक्षा 12 वीं बोर्ड का होना बहुत जरूरी है क्योंकि विद्यार्थियों का पूरा भविष्य इसी पर निर्भर है और इन्हीं के अंकों के आधार पर उनके भविष्य की उड़ान तय होती है।

4. समझें मूल्यांकन का महत्त्व :-

कहते हैं ना कि इंसान को ख़ुद की पहचान करने के लिए खुद का मूल्यांकन जरूरी है, बिना मूल्यांकन हमारी स्थिति क्या है, हम कहा तक पहुँचे हैं बिल्कुल पता नहीं चलता है। वर्तमान के विद्यार्थी जानना चाहते हैं कि हमारी पढ़ाई की वास्तविक स्थिति क्या है, हमें अब तक क्या सीखना चाहिए था जो हम सीख पाए हैं या नहीं। जो भविष्य में हमारे लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

क्या कहता है ऑनलाइन सर्वे :-

हाल ही में गूगल फ़ॉर्म के आधार पर कुमार जितेन्द्र "जीत" ने एक ऑनलाइन सर्वे कर विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से राय जानी की क्या वास्तविक रूप से प्रमोट प्रणाली ठीक रहती है या नहीं। इस पर विद्यार्थियों एवं अभिभावकों ने अपनी-अपनी राय व्यक्त की है।

प्रमोट प्रणाली पर विद्यालय के विद्यार्थियों के विचार :-

कक्षा 8 वीं में पढ़ने वाली छात्रा मोनिका वैष्णव का कहना है कि विद्यार्थियों को प्रमोट करना गलत है क्योंकि प्रमोट करने पर जो होशियार विद्यार्थी है उन्होंने कितनी मेहनत की होगी। अचानक सबको एक साथ प्रमोट कर दिया, उन विद्यार्थियों को कितना नुकसान होगा और प्रमोट करना इसलिए सही नहीं है क्योंकि आगे जाकर उनको विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। विद्यार्थियों को उनके अंकों का भी पता नहीं चलता है जितनी मेहनत विद्यार्थी परीक्षा के लिए करते उतनी मेहनत विद्यार्थी आम दिन में नहीं करता है।

कक्षा 8 वीं में पढ़ने वाली छात्रा नीतू कुमारी का कहना है कि प्रमोट करने का यह विचार मुझे अच्छा नहीं लगा। हाँ प्रमोट की जगह परीक्षा स्थगित ठीक रहती। हमने मेहनत भी बहुत की है जो अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए मदद करेगी और अगली कक्षा में भी काम ही आएगी।

कक्षा 9 वीं में पढ़ने वाली छात्रा भूमिका सोनी का कहना है कि प्रमोट करना गलत है लेकिन प्रमोट की जगह परीक्षाएँ स्थगित करना ठीक है क्योंकि वह विद्यार्थी जो अपने भविष्य को उज्ज्वल करने के लिए और अगली कक्षा में आने के लिए रात - दिन मेहनत करता है और एक वह विद्यार्थी जो बिना मेहनत किए हुए प्रमोट के कारण अगली कक्षा मे आ जाता है तो वो विद्यार्थी जो रात - दिन मेहनत करके अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहता था और एक वह विद्यार्थी जो बिना मेहनत किए हुए प्रमोट के कारण अगली कक्षा में आ जाता कक्षा 9 वीं की छात्रा उर्मिला प्रजापत का कहना है कि प्रमोट करना सही नहीं है, प्रमोट की जगह परीक्षाएँ स्थगित ठीक रहती थीं क्योंकि हर बार विद्यार्थी को लालच मिल जाता है कि इस बार भी हमें प्रमोट कर दिया जाएगा तब विद्यार्थी पढ़ाई में रुचि नहीं लेते हैं।

कक्षा 12 वीं में पढ़ने वाले हितेश जैन का कहना है कि हर बार प्रमोट अच्छा नहीं है क्योंकि प्रमोट करने से विद्यार्थियो का आधार स्तर कमजोर रहता है जो बोर्ड कक्षाओं को प्रभावित करता है।

प्रमोठ प्रणाली पर उच्च कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के विचार :-

स्नातक तृतीय वर्ष में पढ़ने वाले छात्र लक्ष्मण सिंह का कहना है कि प्रमोठ करना सही नहीं है। प्रमोठ की जगह परीक्षाएँ स्थगित ठीक रहतीं क्योकि परीक्षा से विद्यार्थी का मूल्याङ्कन हो जाता है तथा अभिभावक व शिक्षक विद्यार्थी का आंकलन कर सकते हैं। प्रमोठ करने से कई विद्यार्थी शिक्षा का सही महत्त्व भी नही जान रहे हैं क्योकि वो विद्यार्थी लगातार दो वर्षो से प्रमोठ हो रहे है। परीक्षा का मतलब होता हैं कि अब वह विद्यार्थी अगली कक्षा में जाने हेतु योग्य है या नहीं। अगर वह उत्तीर्ण हो जाता है तो इससे तात्पर्य है कि वह छात्र अगली कक्षा में जाने हेतु योग्य हैं। जहाँ CBSE ने 10 वीं की परीक्षा निरस्त की हैं तो उसका परिणाम तब देखने को मिलेगा जब प्रमोटेड छात्र 2023 में 12 वीं की परीक्षा देंगे। मेरे विचार से सरकार को विद्यार्थियों को प्रमोठ करने की बजाय इनकी परीक्षाएँ स्थगित करनी चाहिए थी। स्नातक द्वितीय वर्ष के छात्र प्रकाश जोगसन का कहना है कि प्रमोठ करना बिल्कुल गलत है, प्रमोठ मे स्टूडेंट्स का आंतरिक मूल्यांकन नहीं होता है। इसमें प्रतिभाशाली और कमज़ोर छात्र एक श्रेणी में आ जाते है, प्रमोठ करना गलत है, हाँ परीक्षा स्थगित कर सकते हैं स्थिति सामान्य होने पर परीक्षा करवा सकते हैं। स्नातक तृतीय वर्ष में पढ़ने वाले छात्र शंकर आँजणा नवापुरा कहते हैं कि प्रमोठ करना शत प्रतिशत गलत है क्योंकि बच्चों के मन में हर बार एक ही विचार आएगा कि हम तो पास हो जाएँगे। सरकार ने अगली कक्षा में प्रमोठ कर दिया है। यह बिल्कुल गलत क्योंकि पढाई बिना जीवन अधूरा है पढ़ाई की उम्र अब ही है इसलिए सरकार से निवेदन है कि कोरोना सिर्फ स्कूलों में ही कैसे आता है और चुनावों के प्रचार चल रहे हैं रोड शो हो रहे हैं वहाँ कोरोना क्यों नही आता है जो बिना फालतू सड़कों पर इक्कट्ठे हो जाते हैं वहाँ कोरोना क्यों नहीं है उनसे ज्यादा समझदार बच्चे हैं। विद्यार्थियों जितनी कोई गाइडलाइंस का पालन नहीं कर सकते हैं। मेरी तो एक ही राय है सरकार विद्यार्थियों को प्रमोठ ना करे उनकी परीक्षा करवाएँ। बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के शोधार्थी जीतेन्द्र कुमार गुप्ता जो अभिभावक हैं उनका कहना है कि प्रमोठ करना सही नहीं है। प्रमोठ की जगह परीक्षा स्थगित ठीक रहती थी। समय अनुकूल होने पर परीक्षाएँ आयोजित करवानी चाहिए।

प्रमोट प्रणाली पर अभिभावकों के विचार :-

कक्षा 7 वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थी के अभिभावक विनोद कुमार चेजारा कहते हैं कि हर बार प्रमोट करना अच्छा नहीं है। इसकी जगह परीक्षा स्थगित करना चाहिए था। कक्षा 10 वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थी के अभिभावक ज्योति किरण का कहना है कि हर बार प्रमोट ठीक नहीं है। परीक्षा स्थगित हो जानी चाहिए थी। कक्षा 9 वीं में पढ़ने वाली छात्रा की माँ कमला देवी का कहना है कि प्रमोट करना अच्छा नहीं है। बिना परीक्षा दिए पास होकर बच्चे आगे जाकर क्या करेंगे। कुमार जितेन्द्र "जीत" के ऑनलाइन सर्वे और विश्लेषण से यह उभर कर सामने आता है कि वर्तमान वैश्विक महामारी COVID-19 में विद्यार्थियों की जिंदगी अतिमहत्वपूर्ण है। जिंदगी से बढ़कर कोई परीक्षा नहीं होती है। लेकिन विद्यार्थियों के मजबूत भविष्य को लेकर अगर सोचें तो प्रमोट प्रणाली उनको एक खोखला रूप देंगी। प्रमोट की जगह परीक्षाओं का स्थगन हो सकता है और जैसे ही समय अनुकूल हो परीक्षाओं का आयोजन किया जाए जिससे विद्यार्थियों को ख़ुद का मूल्यांकन करने का अवसर मिले और एक बेहतरीन, मजबूत और वास्तविक युवा पीढ़ी तैयार हो सके।

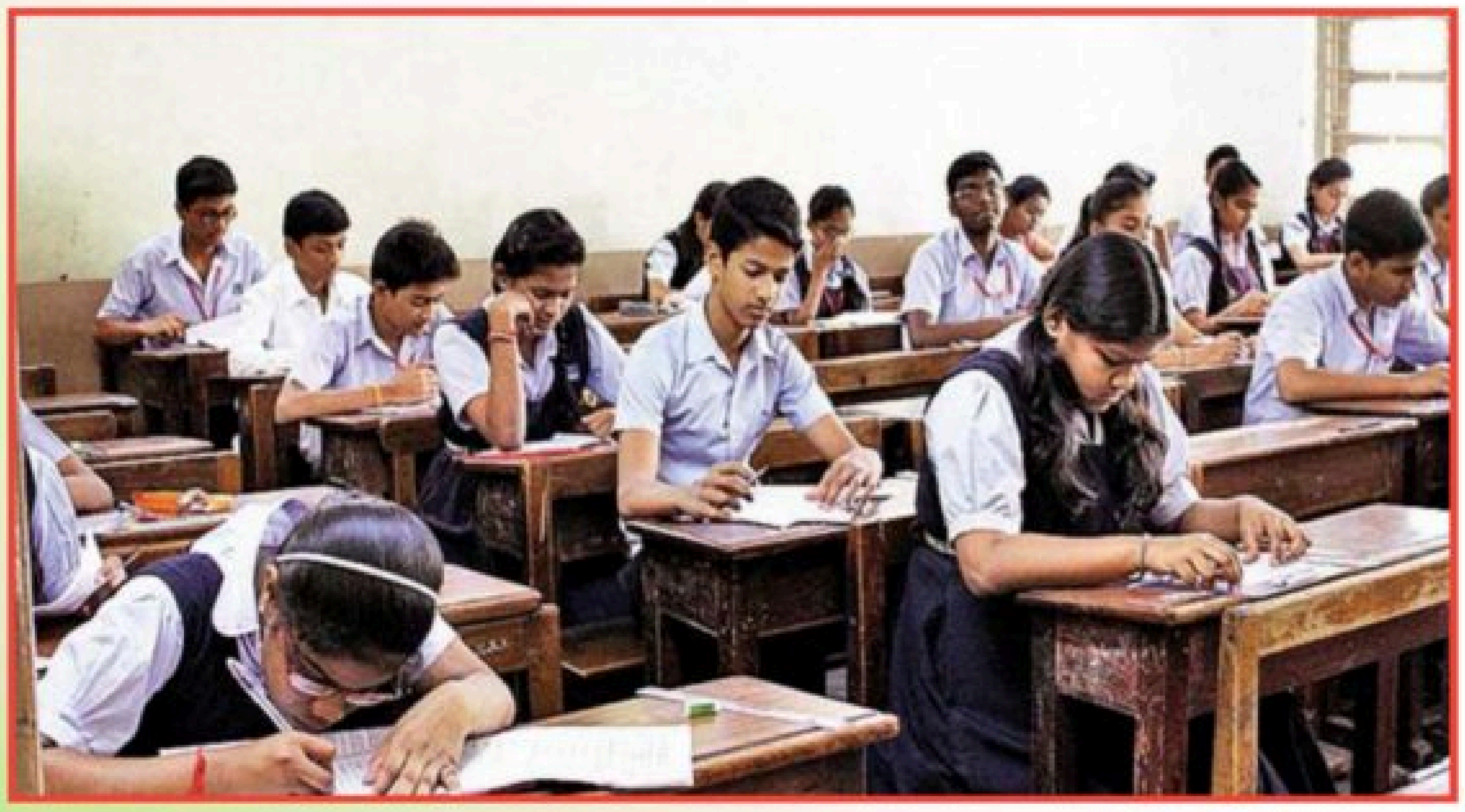

कुमार जितेन्द्र "जीत"
कवि, लेखक, विश्लेषक, वरिष्ठ अध्यापक-गणित,
साईं निवास मोकलसर,
तहसील-सिवाना,
जनपद-बाड़मेर, (राजस्थान)

शिक्षण की तकनीकें
पढ़ेगा इंडिया, बढ़ेगा इंडिया।

पढ़े भारत, बढ़े भारत यह सर्व शिक्षा अभियान है जो पूरे भारत वर्ष में अपना रुतबा कायम किए हुए है। भारत एक प्रगतिशील देश है। यहाँ पर धरती कदम कदम पर रंग बदलती है फिर चाहें वो तकनीकी हो या कम्प्यूटर का क्षेत्र। आखिरकार यह दोनों ही सम्भव हैं तो शिक्षा के कारण। शिक्षा जो प्रत्येक मानव का अधिकार है।

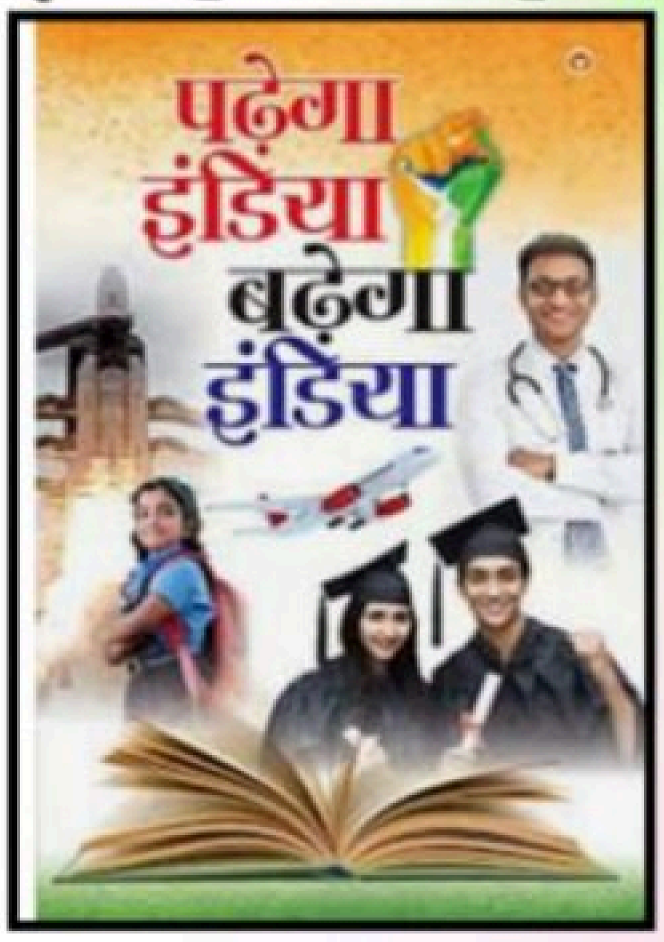

न चौर हार्यं, न च राज हार्यं।
भ्रातृ भाज्ये न च भार कारी।
त्यय प्रत्यय वरद्धते एवं नियत्यं।
विद्या धनम सर्व धनम प्रधानं।।

विद्यालय रूपी धन को कोई चुरा नही सकता, राजा ले नहीं सकता, भाइयों में विभाजित नहीं हो सकता, उसका भार नहीं लगता और खर्च करने से बढ़ता है। सचमुच विद्यारूपी धन सर्वश्रेष्ठ है।

यानी अगर किसी के पास यह धन है तो वह सबसे अधिक धनवान है। शिक्षा अगर किसी का अधिकार है तो बाल्यावस्था में चल रहे बच्चों के लिए अति उपयोगी तथा महत्वपूर्ण है क्योंकि इन पर ही हमारे देश का भविष्य निर्भर करता है।

अब बात करते हैं शिक्षा में अगर तकनीकी को जोड़ दिया जाए तो इसके क्या क्या स्वरूप हो सकते हैं।

भारत तकनीकी और नवाचार के आधार पर 48वें स्थान पर है। जिस ढंग से शिक्षा शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं।

शिक्षण की विविध विधियाँ-

1.निगमनात्मक तथा आगमनात्मक-

पाठ्य विषय को प्रस्तुत करने के 2 ढंग हो सकते हैं। रोल नंबर ... ... को कोई समय सिद्धांत बताकर उसकी जाँच व पुष्टि के लिए अनेक उदाहरण दिए जाते हैं। दूसरे में पहले अनेक उदाहरण देकर छात्रों से कोई सामान्य नियम निकलवाया जाता है।पहली विधि को निगमनात्मक व दूसरे को आगमनात्मक कहते हैं। यह विधि व्याकरण शिक्षण के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

2.वस्तु विधि-

शिक्षण का एक प्रसिद्ध सूत्र है मूर्त से अमूर्त की ओर। वास्तव में बाह्य संसार का ज्ञान अपनी ज्ञानेंद्रियों के द्वारा होता है जिनमें नेत्र प्रमुख हैं। किसी वस्तु पर दृष्टि पड़ते ही हमें उसका सामान्य परिचय मिल जाता है। अतः मूर्त वस्तु ज्ञान प्रदान करने का सबसे सरल साधन है। इसलिए आरम्भ में वस्तु विधि सबसे सरल साधन है।

3.दृष्टान्त विधि-

वस्तु विधि का एक दूसरा रूप है दृष्टान्त विधि। वस्तु विधि में जिस प्रकार वस्तुओं के द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है, दृष्टान्त विधि में उसी प्रकार दृष्टांतों के द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है। इसमें चित्र, मानचित्र, चित्रपट आदि के सहारे वस्तु का स्पष्टीकरण जाता है। साथ ही उपमा, उदाहरण, कहानी, चुटकुले आदि के द्वारा विषय का स्पष्टीकरण हो सकता है।

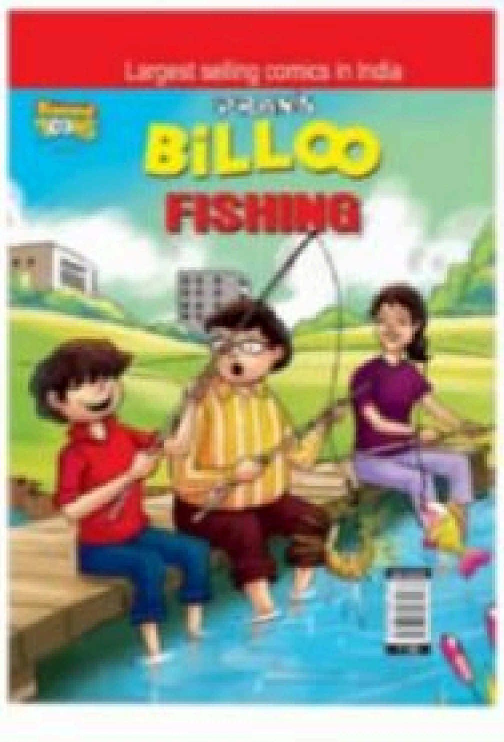

4-प्रोजेक्ट विधि-

अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री ड्यूवी, किलपैट्रिक, स्टुबेन्सन आदि के सम्मिलित प्रयास का फल योजना विधि (प्रोजेक्ट विधि) है। इसके अनुसार ज्ञान प्राप्ति के लिए स्वाभाविक वातावरण अधिक उपयुक्त होता है। इस विधि से पढ़ाने के लिए पहले समस्या ली जाती है जो प्रायः छात्रों के द्वारा उठाई जाती है और उस समस्या का हल करने के लिए उन्हीं के द्वारा योजना बनाई जाती है तथा योजना व योजना का स्वाभाविक वातावरण पूर्ण किया जाता है। इसकी परिभाषा इस प्रकार की जाती है कि योजना वह समस्यामूलक कार्य है जो स्वाभाविक वातावरण में पूर्ण किया जाए। अगर इन चारों विधियों को पूर्ण रूप में पालन किया जाए तो शिक्षा में सुधार अवश्य देखने को मिलेगा। अतः इन सबके उपरान्त अगर इसमें तकनीकी का तड़का लग जाए जैसे- इंटरनेट, मोबाइल, कम्प्यूटर आदि तो इन सारी विधियों को पूर्ण करना आसान होगा।

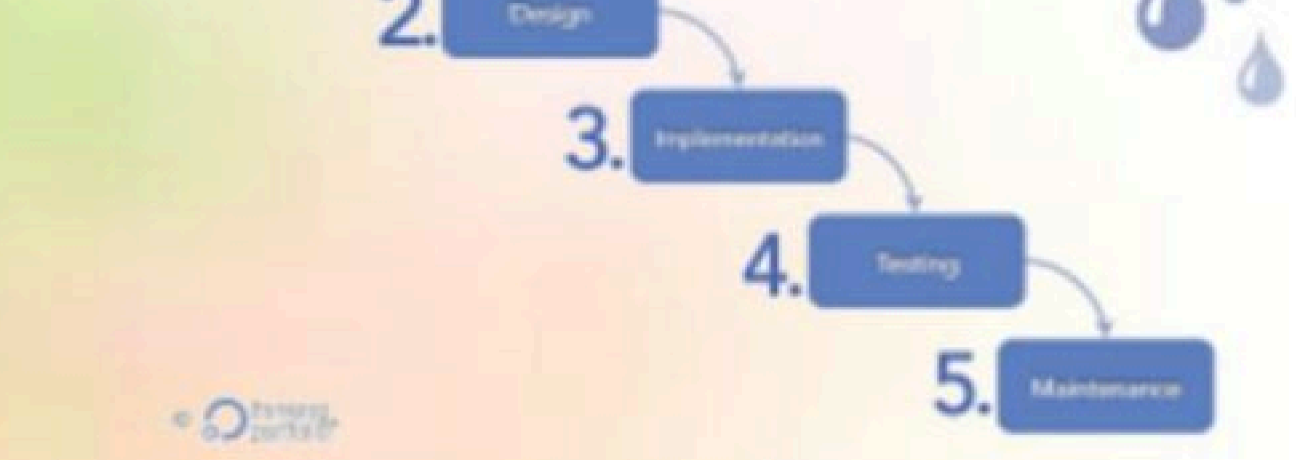

रूमि गम्भीर,
सहायक शिक्षिका,
कम्पोजिट विद्यालय इटैली,
विकास खण्ड- हथगाम,
जनपद- फतेहपुर।

Women's sense of self worth

"There are two powers in the world. One is the sword and the other is the pen. There is a third power stronger than both, that of women". Women empowerment is made up of two words, women and empowerment. To give power or authority to someone is called empowerment. It means that women should have equal opportunity in every field without any discrimination. And women should be physically, mentally and socially strong. Women were highly respected in the vedic ages. In India, in ancient days women enjoyed respect, education and reverence. Before independence the condition of women was very poor.There were many social evils in the society like sati pratha, child marriages, slavery, illiteracy etc. Social reformers like Raja Ram Mohan Roy, Savitri Bhai Phule etc worked to eradicate social evils from society. Gradually, after independence women started regaining the lost power. Today, they proved themselves in every field like Saina nehwal, Marry Com, Hima Das in sports, A Chatterjee, Tessi Thomas in Science, kiran Bedi, Bhawna kanth, Avanii chaturvedi, in police and Force etc. Mamta banerjee, Smriti Irani, Nirmla Sitaraman in politics, Lata mangesker, sunidhi chauhan, Shreya ghosal in music, Uma sharma, Hema malini, shovna narayan in classical dance etc. Need of Women empowerment History says that women were ill treated. The patriachal society suppressed women's freedom across the world. Women were not allowed to vote or even to give their opinion. Also, there was no involvement of women in decision making.

At present, women are facing various crimes like acid attack, dowry system, honour killing, domestic violence etc. Due to female infanticide practices, number of girls is reducing day by day. India is among the nation's where women are still not safe. Female infanticide, discrimination,Domestic violence, rape, murder, unequal wages are the major problems in India.

"Be the heroine of your life, not the victim".

We can empower women by eliminating Child marriages, by educating them, by gender equality in India. The humiliation of divorce and abuse must be thrown out of society. Parents must educate their daughters, it's wrong to tolerate anyone's abuse even if they are abused by their own family members. Parents should make their daughters mentally strong.

Women are empowered hence they are able to acess opportunities in various fields such as education, profession, lifestyle etc. without any limitations and restrictions. Raise them through education, awareness, literacy and training.

Women can be empowered in various ways. It can be through government schemes as well as on an individual basis. We all should respect women and start giving her respect and equal opportunity. Government has come up with various schemes such as Beti Bachao, Beti padao yojna, Mahila- e - Haat, Mahila shakti kendra, Sukanya Samriddhi yojna, Mission shakti Abhiyaan etc. Apart from these, the most important step to empower women is to Boost her self esteem, provide her opportunity to become a mentor and appreciate her efforts.

Education and awareness are the most important things which make every woman supreme. Women should realise that being a woman should be your supreme achievement. Fuel yourself with self confidence.

Suman Sharma,
Assistant Teacher,
UPS Garhi Mali,
Block - Chhata,
District - Mathura.

बाल कविता।

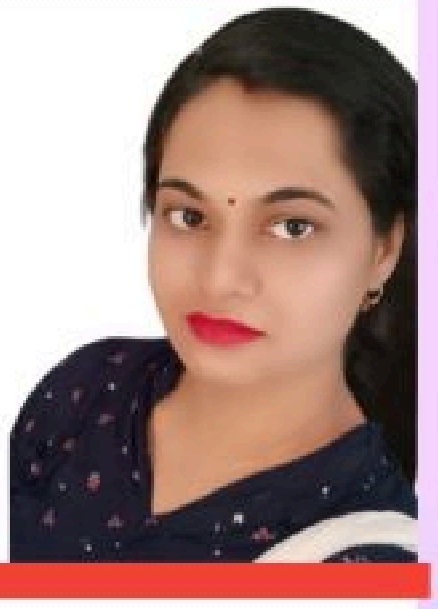

हरी सब्जियाँ

शिक्षण संवाद

हरी सब्जियों में होते बड़े गुण,
मैं बताता हूँ, सुन भाई सुन।
देखो ये रसीला टमाटर लाल-लाल,
रखता हमें तन्दुरुस्त सालों साल।।

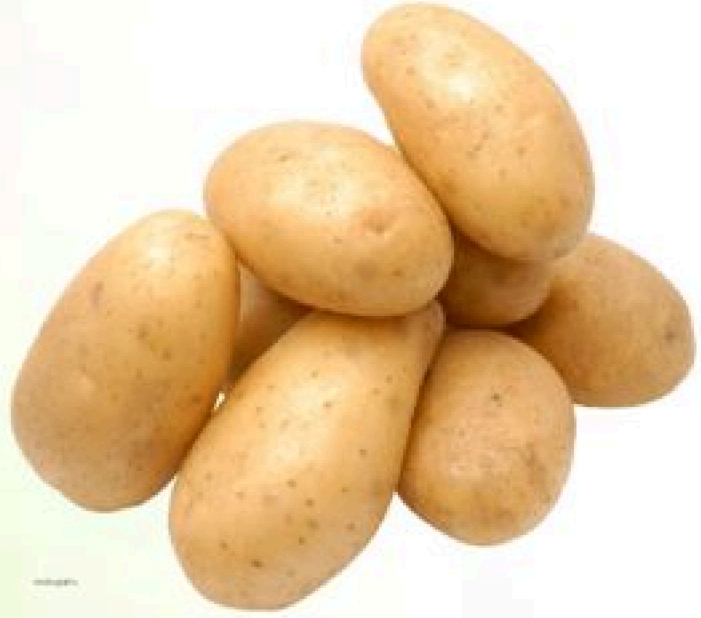

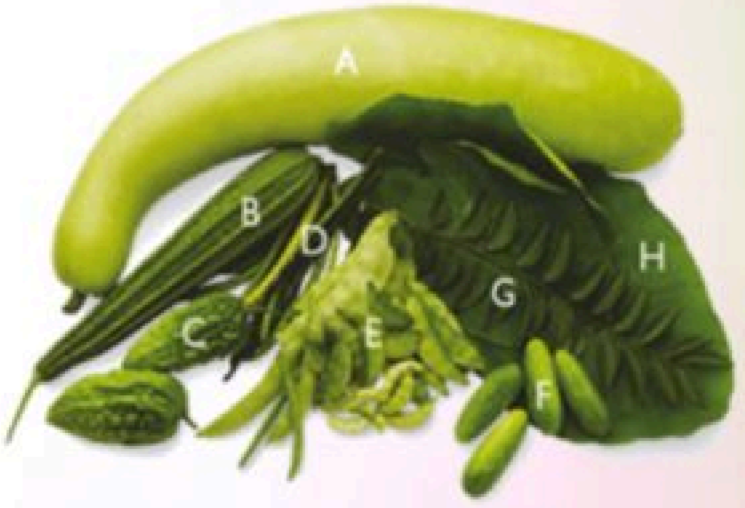

आलू होता सब्जियों का राजा,
सबकी सेहत खूब बनाता।
लौकी, तौरी, टिंडा से मुँह ना मोड़ो,
तंदुरुस्ती से खुद का नाता जोड़ो।।

मूली, गाजर, खीरा कैसे खाएँ,
सलाद के रूप में इन्हें अपनाएँ।
इसीलिए कहते हैं ताजी हरी सब्जियाँ खाओ,
रोगों को तुम दूर भगाओ।।

शोभना,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय उमाही राजपूत,
विकास क्षेत्र- नानौता,
जनपद- सहारनपुर।

बाल कविता 2

जंगल मे स्कूल

शिक्षण संवाद

महाराज शेर ने जंगल में खोला एक नया स्कूल,
जिसमें हेडमास्टर बने मिस्टर बन्दर कूल।
पहले ही दिन आ पहुँचे जंगल के जीव-जन्तु,
चीता प्रसाद, हिरण गोयल, बाघ शर्मा,
कोयल सिंह, हाथी कुमार, खरगोश कुमार वर्मा।

मोरनी रानी संग आए उनके भाई मोर मिन्टू,
और धीमी गति से पहुँचे कछुआ चिन्टू।
हेडमास्टर जी ने फिर ली सबकी हाज़िरी,
और कहा कि अब होगी एक रोचक गतिविधि।

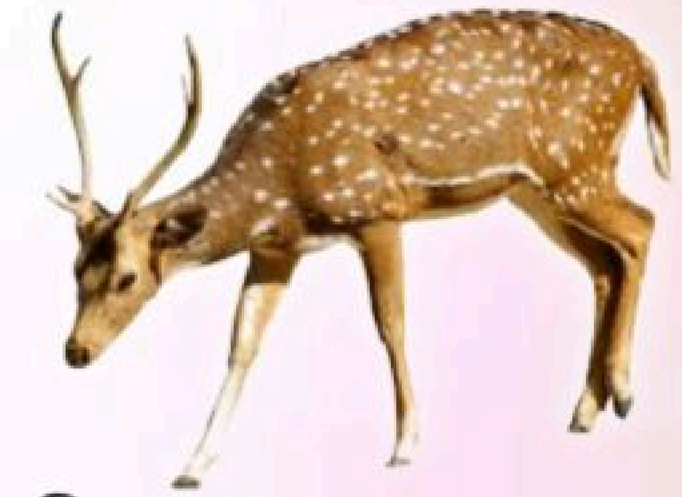

सब बच्चों को देना होगा अपना एक परिचय,
उनके क्या गुण हैं यही है आज का विषय।
चीता प्रसाद बोले सबसे तेज़ गति से दौड़ना है उनकी खासियत,
हिरण गोयल बोले चौकस होकर तेज़ दौड़ना है उनका हुनर।

कोयल सिंह ने अपनी मधुर आवाज़ से,
दिया अपनी विलक्षणता का परिचय।
मोर मिन्टू ने अपने पंख फहराकर,
अपना अनोखा नाच दिखाया।

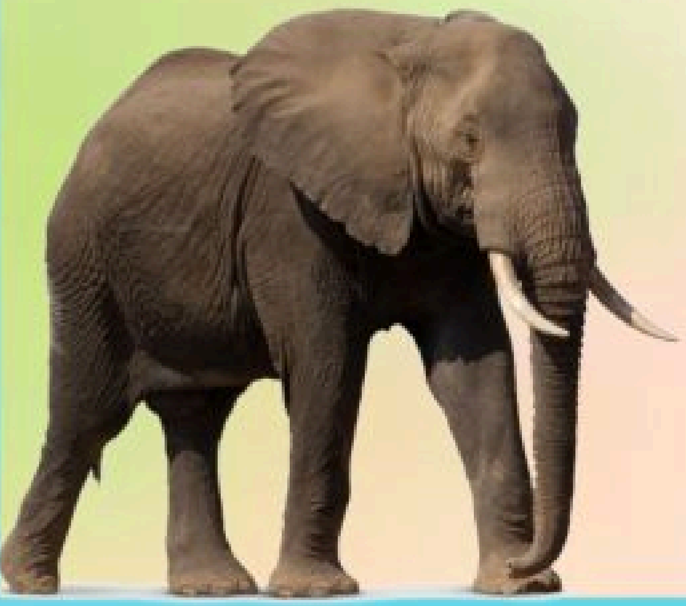

एक हाथ से भारी टेबल उठाकर,
हाथी कुमार ने अपना जलवा दिखाया।

फिर हेड मास्टर जी ने बाघ शर्मा को उसकी ताकत और,

होशियारी के कारण क्लास-मॉनिटर बनाया।

फिर स्कूल की घंटी बजी और सब ने गाना गाया-

"जंगल हमारा, प्यारा-प्यारा,

सबसे न्यारा, सबसे प्यारा,

हम सब रहते हैं जंगल में,

यह है प्यारा घर हमारा।"

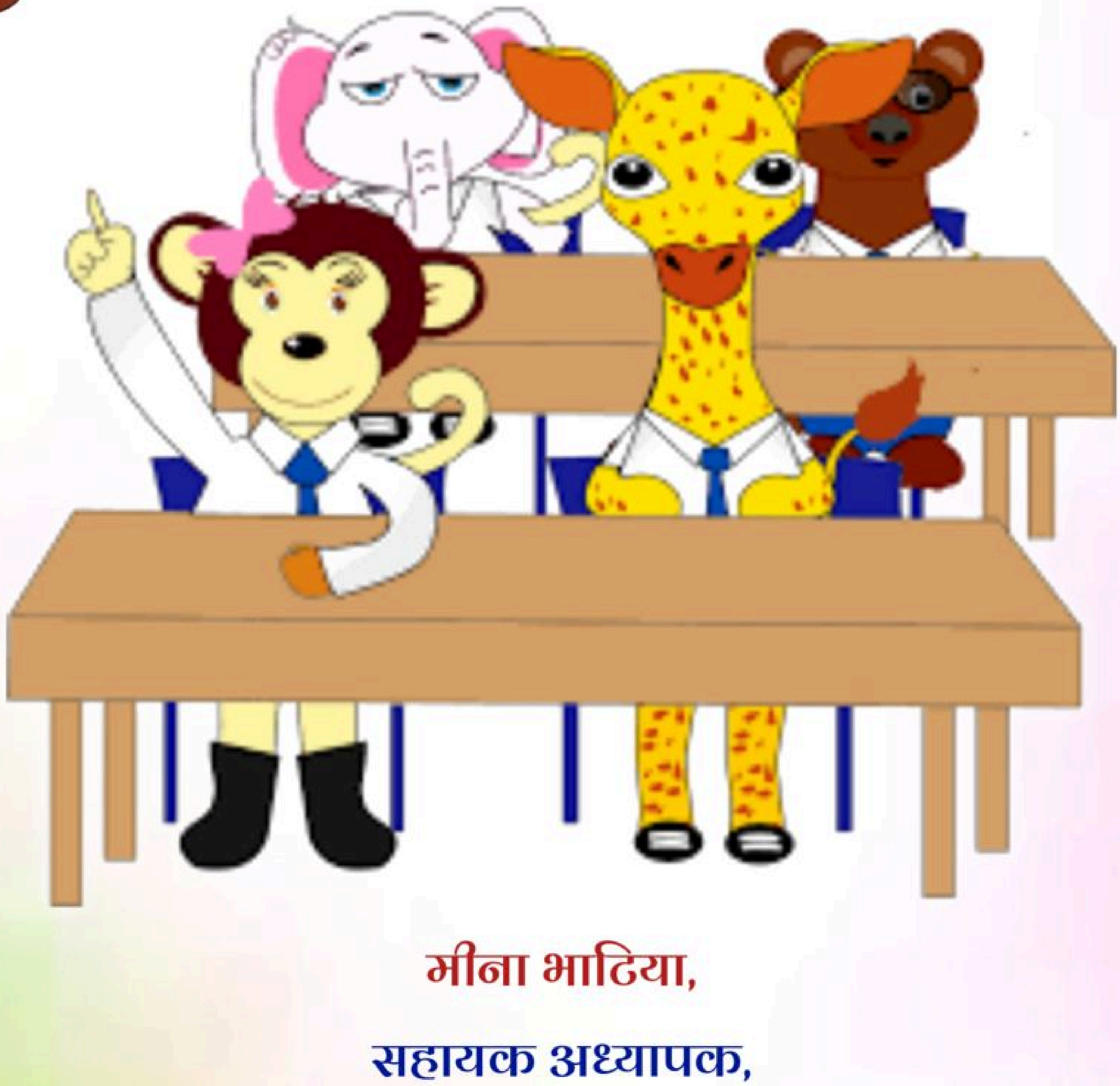

मीना भाटिया,

सहायक अध्यापक,

प्राथमिक विद्यालय डाढ़ा,

विकास खण्ड-दनकौर,

जनपद-गौतम बुद्ध नगर।

फ्लैश कार्ड्स

उद्देश्य- यह एक भाषा का टीएलएम है जिसमें कि फ्लैश कार्ड से बच्चे चित्रों को देखकर वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। बच्चे अक्षरों की पहचान व मात्राओं की पहचान सरलतापूर्वक कर सकते हैं।

आवश्यक सामग्री- कार्ड शीट, स्केच पेन, कलर आदि।

कक्षा - 1, 2, 3

निर्माण की विधि- कार्ड शीट से एकसमान आकार के कुछ कार्ड काट लीजिए। उन कार्ड पर बच्चों की सहायता से अक्षर, मात्राएँ व छोटे-छोटे शब्द लिखें। शब्दों के साथ चित्र भी बनाकर उन्हें रोचक बनाया जा सकता है।

कक्षा में उपयोग - इसमें पहले तो बच्चों को वर्णमाला के सभी अक्षरों की पहचान कराते हैं, मात्राओं की पहचान कराते हैं। गतिविधि के माध्यम से भी इसको आसानी से कराया जा सकता है। बच्चों को गोलाकार में बिठाकर फ्लैश कार्ड में लिखे शब्दों को बोलकर खेल-खेल में अक्षरों में मात्राओं का ज्ञान करा सकते हैं। यह बहुत ही उपयोगी टीएलएम है। बच्चे खेल-खेल में अक्षरों को पहचान जाते हैं। वह आसानी से दो तीन चार अक्षरों के शब्द बना सकते हैं। उन्हें मात्राओं का ज्ञान भी आसानी से कराया जा सकता है। सभी मात्राओं के फ्लैश कार्ड भी बनाए गए हैं। इसीलिए इस टी एल एम का नाम है-फ्लैश कार्ड उठाओ, शब्द बनाओ, खेल-खेल में प्रेरणा लक्ष्य पाओ।

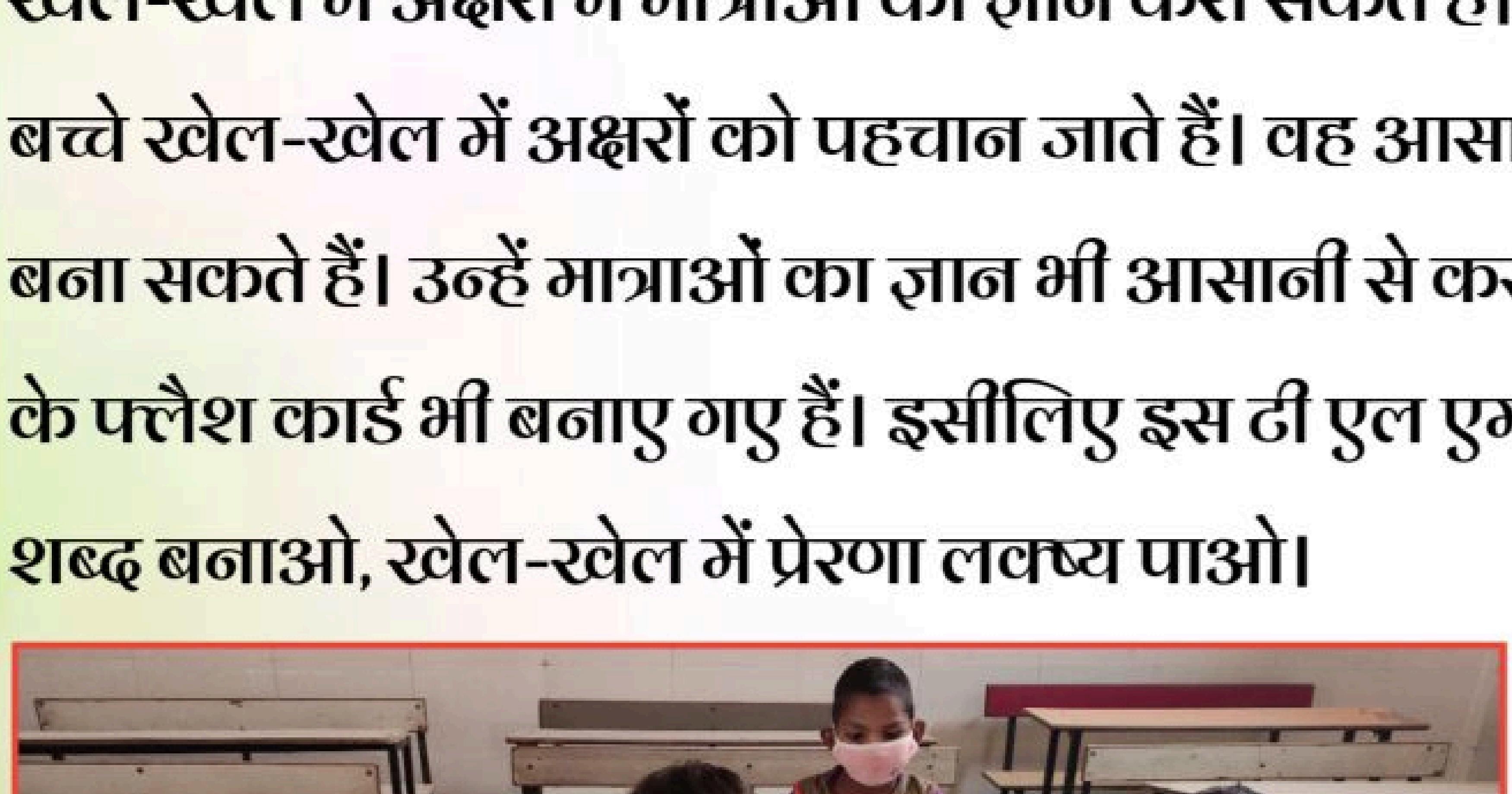

रेनू शर्मा,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर
विकास खण्ड-लोनी,
जनपद-गाजियाबाद

English Medium Diary

Education System In India

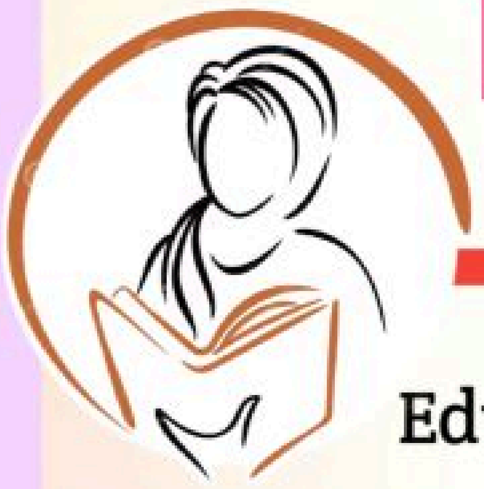

शिक्षण संवाद

Education system in India is running on two wheels of education, that is private schools and government schools.Nurishing the education does not limited to literate the children only.It contains a lot for overall development of children.

Most of private schools are imparting the education on english medium where as government schools are functioning in regional languages.Government decided to introduce to english medium for maintaining the better competency in education system.

Government english medium are working on the socialist theory where as private english medium follows capitalist structure.private english medium schools mainly provide the opportunity to financially capable class of society.

Though private schools are enriched with good infrastructure and extra curricular activities but government english medium schools plays a vital role to maintain the education level and the upliftment of depressed and financially weak society irrespective of their social status.

In comparison to private schools, government schools are wiping out the diseases like untouchability, racism and discrimination more efficiently by providing the equal opportunity of education of society.

To educate the financially strong class is not an issue as they are aware with the importance of education. However, this is the most challenging milestone to attract socially and financially weaker classes when they are not aware with the importance of education and do not pave the path to schools.

In view of above, it can be concluded the government english medium schools are sustaining the flame of education alive in rural and semi urban areas inspite of limited sources and unawareness of people.In addition to this most important part is that teachers in goverment english medium schools are very qualified as compare to private schools.

Rummy Gambhir,
Assistant Teacher,
Composite school Itaily,
Block-Hathgan,
District-Fatehpur.

प्रेरक प्रसंग

जमशेद जी टाटा

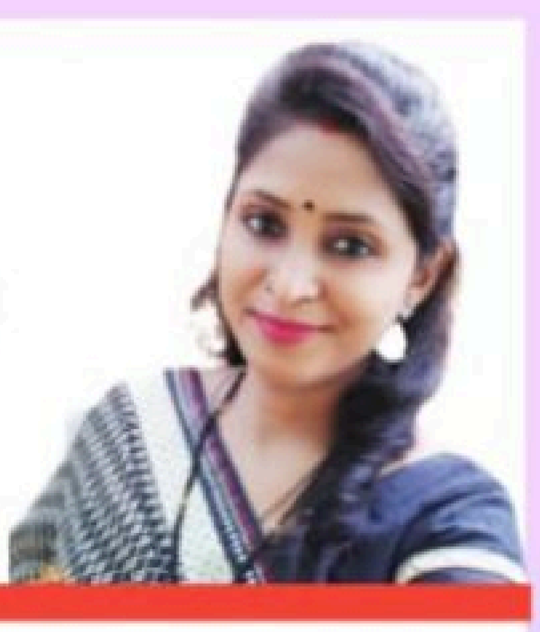

शिक्षण संवाद

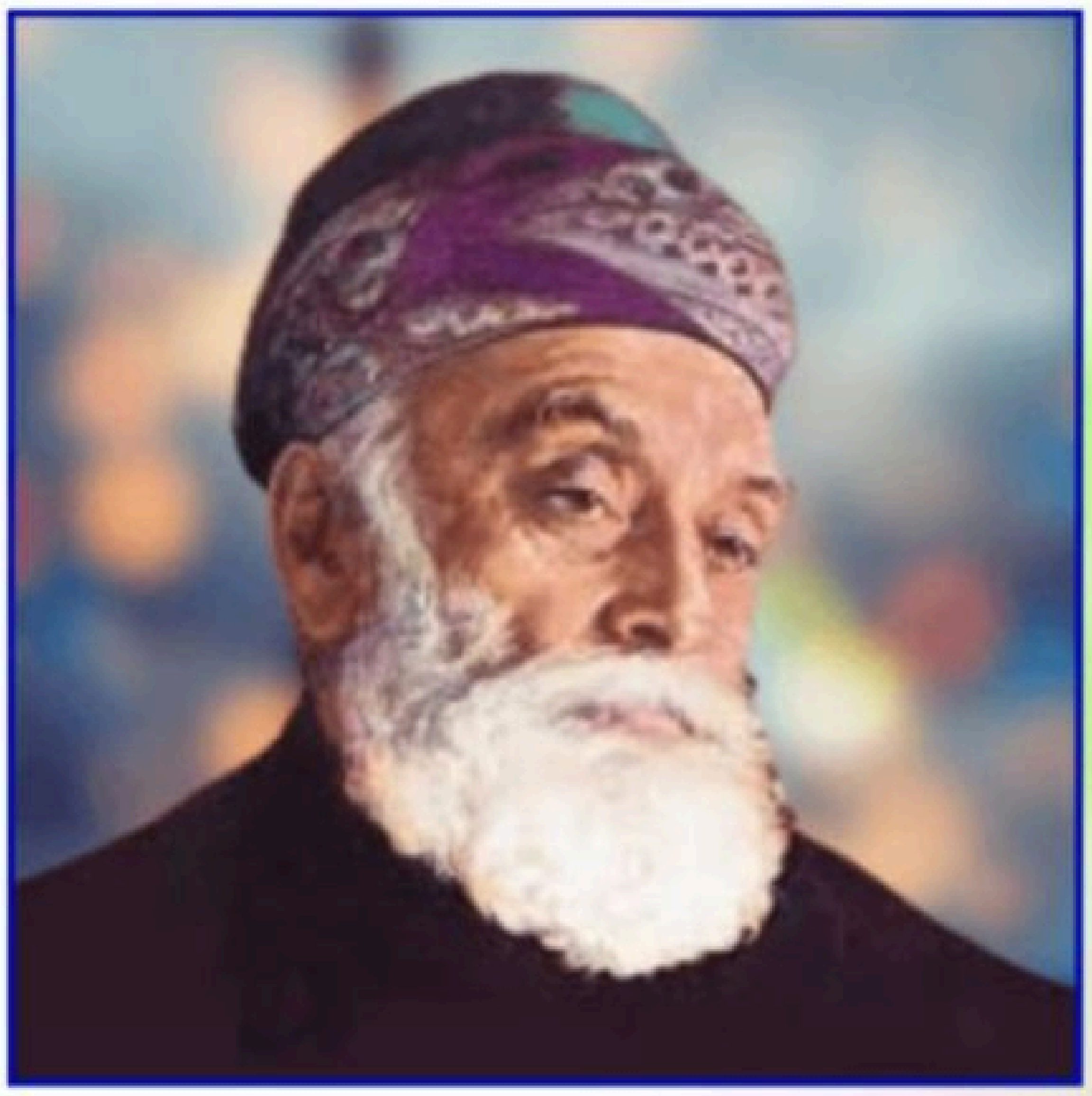

कहते हैं कि सफलता की यात्रा कठिन परिश्रम के एक-एक पग से पूरी की जाती है इन पंक्तियों को सार्थक करने वाले महान व्यक्तियों में से एक जमशेद जी टाटा भी थे जिनके सफलता के अनूठे प्रयास से पीढ़ी दर पीढ़ी भारत को एक नई दिशा मिली। जमशेद जी टाटा भारत के महान औद्योगिक घरानों में से एक टाटा समूह के संस्थापक थे। इनका जन्म गुजरात के एक छोटे कस्बे नवासारी में 3 मार्च 1839 में हुआ था। इनके पिता का नाम नौशेरवान जी तथा माता का नाम जीवन बाई टाटा था।

भारतीय औद्योगिक विकास में जमशेद जी टाटा का योगदान अतुलनीय तथा अविस्मरणीय है। उन्होंने ऐसे समय में भारत में औद्योगिक मार्ग को प्रशस्त किया जिस समय औद्योगिक जगत में यूरोपीय या कहें अंग्रेजों का ही बोलबाला था। जिस समय सभी देशों में अफीम के कारोबार पर जोर दिया जा रहा था ऐसे समय में जमशेद जी ने मुंबई में एक दिवालिया हो चुकी तेल मिल को खरीद कर उसे कपड़े की मिल में परिवर्तित किया मुनाफा होने पर बाद में नागपुर में भी एक कॉटन मिल को खरीदा। इस तरह अपने छोटे-छोटे सफल प्रयासों से जमशेद जी ने टाटा समूह को एक नए बिजनेस एम्पायर के रूप में खड़ा किया। उन्होंने न केवल नयी-नयी औद्योगिक इकाइयाँ विकसित की बल्कि उनमें काम करने वाले कर्मचारियों का भी खासा ध्यान रखा और उनके लिए अनेक सुविधाओं की व्यवस्था की जैसे कि काम के अनुकूल माहौल तैयार करना, काम के घंटे तय करना, प्रोविडेंट फंड तथा ग्रेच्युटी आदि सुविधाओं की व्यवस्था। उन्होंने कर्मचारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए मिलों के बाहर पुस्तकालय, उद्यान, दवाओं की व्यवस्था की। उनका मानना था सफलता किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि उस व्यक्ति के साथ जितने लोगों ने

परिश्रम किया उन सबकी होती है। उनकी जिन्दादिली और दृढ़ निश्चय को इस घटनाक्रम द्वारा समझा जा सकता है। एक बार जमशेद जी टाटा ब्रिटेन के एक होटल में कुछ अन्य सदस्यों के साथ गए थे परंतु वहाँ उन्हें प्रवेश करने से रोका गया तथा कहा गया कि इस होटल में सिर्फ यूरोपीय लोगों को आने की अनुमति है उस क्षण जमशेद जी ने ठाना कि वह भारत में एक ऐसे होटल का निर्माण करेंगे जिसमें न केवल भारतीय अपितु देश-विदेश के सभी लोगों को आने की अनुमति होगी। इस सपने को साकार रूप देते हुए उन्होंने मुंबई में ताज होटल का निर्माण किया। उन्होंने एक औद्योगिक नगरी का सपना देखा था जिसे बाद में दोराबजी टाटा ने पूरा किया तथा उस शहर का नाम जमशेदपुर रखा। इस प्रकार जमशेद जी टाटा ने अपने सफल प्रयासों से भारत में एक ऐसी नींव डाली जिसके बल पर भारत के औद्योगिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ जो आज भी सफलता के आयाम गढ़ रहा है।

दीपिका वर्मा
(सहायक शिक्षिका)
प्राथमिक विद्यालय मदरी प्रथम
विकास खण्ड- अमौली
जनपद- फतेहपुर

बाल फिल्म

जलपरी

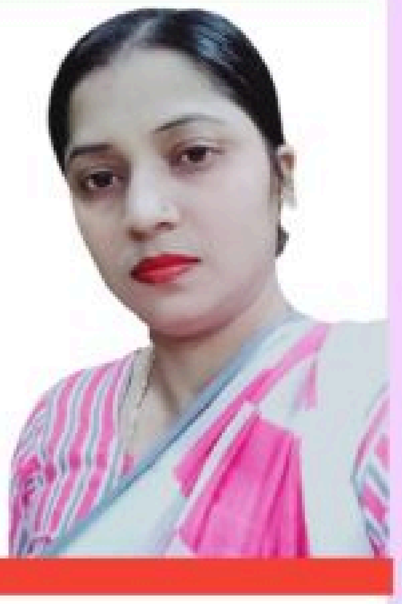

शिक्षण संवाद

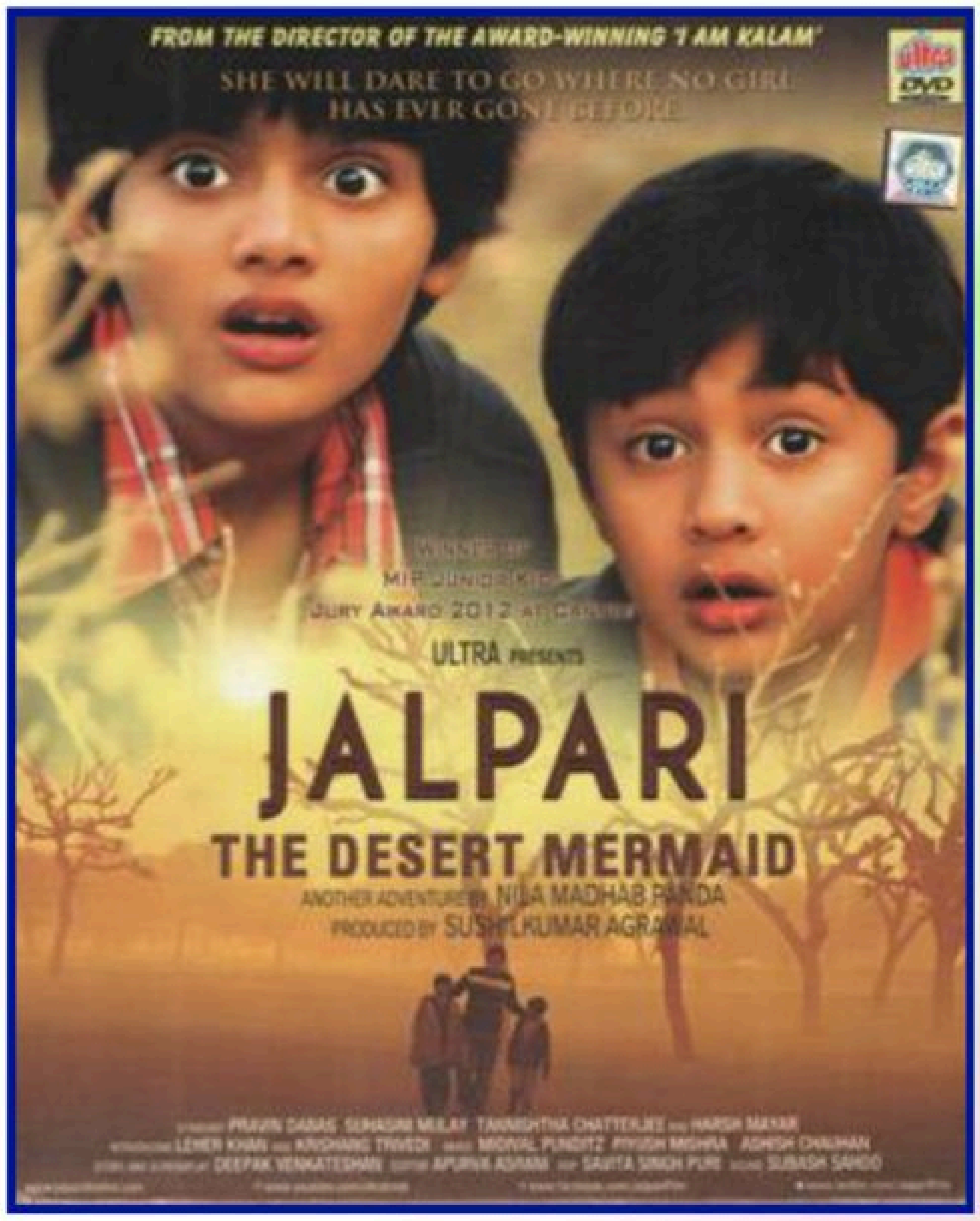

जलपरी फिल्म जिसके निर्देशक निला माधव पांडा जी हैं। इन्होने इस फिल्म में कन्या भ्रूण हत्या के साथ समाज में बालिकाओं को लेकर फैली कुरीतियो और प्रथाओं की ओर भी इशारा किया है।

फिल्म की कहानी दिल्ली से सटे हरियाणा के एक गाँव की है। जहाँ देव अपने बच्चों श्रेया और सैम के साथ आया है। देव के ये दोनों बच्चे शहर में पले-बढ़े हैं। गाँव के रहन-सहन की उन्हे आदत नही है। उसकी बड़ी बेटी श्रेया बिल्कुल लड़कों की तरह दिखती है। उसे जब कोई लड़की समझता है। उसे बहुत बुरा लगता है।

शुरूआत में बच्चों को गाँव का रहन-सहन पसन्द नहीं आता लेकिन जल्द ही वह वहाँ अपने कुछ दोस्त बना लेते हैं। जब वह यहाँ पर आती है उसे यहाँ पर लोग काफी पुराने ख्यालों वाले लगते हैं। श्रेया को तब धक्का लगता है। जब उसे पता चलता है कि इस गाँव में उसके अलावा कोई भी लड़की नहीं है क्योंकि इस गाँव मे लड़कियों का जन्म लेना एक पाप की तरह है। श्रेया को एक बात बहुत परेशान करती है कि गाँव वाले एक डायन से डरते हैं। इसलिए वह यह सोचती है कि गाँव वालों के दिमाग से यह बात निकालेगी। इस फिल्म में भ्रूण हत्या के मुद्दे को बखूबी उभारा गया है। इसकी विशेषता

यह है कि यह कन्या भ्रूण हत्या पर बनी एक दिल्चस्प कहानी है। जो सिर्फ एक कहानी ही नहीं बल्कि हमारे आस-पास की सच्चाई को बयां करती है।

इस फिल्म में बच्चों को बड़ा मजा आएगा। इस फिल्म में श्रेया ने हर चुनौतियों से पंगा लिया है। गाँव की गर्भवती महिलाओं का जबरदस्ती गर्भपात कराया जा रहा है। इन सभी रहस्यों का श्रेया पर्दाफाश करती है। छोटे-छोटे बच्चे किस तरह से साहसिक कार्य कर जाते हैं। इस फिल्म में यह बखूबी दर्शाया गया है। इस फिल्म में श्रेया ने शबरी के पेट में पल रही एक छोटी सी बच्ची की जान बचायी। इस फ़िल्म में बच्चों की कला का एक बेहतरीन नमूना देखने को मिला है। इसलिए यह जरूरी है कि हम बच्चो की क्षमताओं और रचनात्मकता को बढ़ावा दें। इन फ़िल्मो का लक्ष्य यह है कि हम बच्चों के जरिए उन सामाजिक मुद्दों तक पहुँचें जो हमारे समाज को गन्दा किये हुए हैं। बच्चों के विचारों को व्यक्त करने के लिए यह बाल फिल्म बेहतर माध्यम है। बाल फिल्म के जरिए हम विभिन्न सामाजिक मुद्दों को खुलकर समाज के सामने ला सकते हैं।

मुनइम परवीन,
(प्रधानाध्यापिका),
प्राथमिक विद्यालय हथगाम- 2,
विकास खण्ड- हथगाम, जनपद- फतेहपुर

बाल कहानी

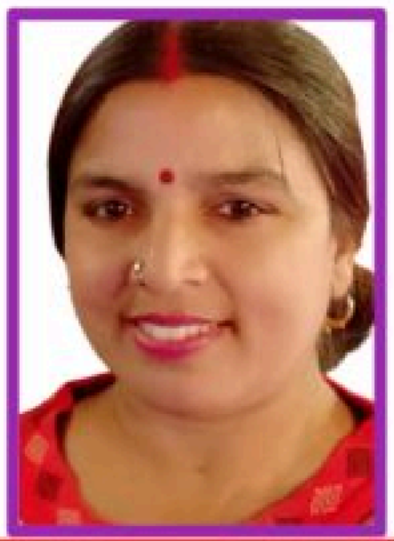

रानी और सलोनी

शिक्षण संवाद

रानी की थी एक काली बकरी। बकरी का नाम था सलोनी। सलोनी के थे नुकीले सींग। सुबह पेड़ों पर पन्छी बोलते "कूँ - कुं, चीं चीं" और सलोनी कहती "मैं s s s s! मैं s s s s! दिन भर दौड़ती। गले में बँधी घण्टी कहती टुन - टुन - टुन! बकरी गाती मैं, मैं घण्टी कहती टुन - टुन। बकरी को तालाब के मेंढक बहुत अच्छे लगते। वह सुनती टर्र - टर्र - टर्र और तालाब पर पहुँच जाती। मेंढक डर कर तालाब में पहुँचते और तालाब में कूदने की आवाज आती 'गुड़ुप'। फिर सलोनी ने एक मेंढक से दोस्ती कर ली। अब वह सलोनी से नहीं डरता था। वे दोनों घास पर बैठकर धूप सेंकते और गाते "टर्र - टर्र, मैं - मैं। रानी भी हँसती और कहती सलोनी और टर्र सिंह। एक दिन सलोनी ने एक मेमने को जन्म दिया। रानी बहुत खुश होती और मेमने को वह गोदी में लेकर खेलती। उसके गले मैं भी एक घण्टी बाँध दी गयी। वह कूदता तो घण्टी कहती रुन - झन, रुन - झन। अब तालाब के किनारे सब खेलते।

रानी एक दिन स्कूल से लौटी तो देखा सलोनी उदास है, रानी को देखते ही रोते हुए बोली मैं हहहह , मैं हहहहह। रानी ने पूछा क्या हुआ सलोनी। फिर उसे याद आया कि उसका मेमना तो दिख नहीं रहा। उसने माँ से पूछा," पल्लू कहाँ है माँ? " तो माँ ने बताया कि पास के गांव के चाचा उसे हज़ार रुपये में खरीद कर ले गए हैं। बापू मिठाई और कपड़े लेने गए हैं। आह मिठाई! रानी के मुँह में पानी आया। नए कपड़ों की खुशबू और नीली रेशमी फ्रॉक उसकी

आँखों के सामने नाचने लगीं। तभी बाहर से सलोनी बोली मैं ऽ ऽ ऽ हं हैं । रानी का दिल धक सा हुआ। सलोनी बल्लू के बिना कैसे रहेगी? उसने तुरन्त माँ से कहा, " मुझे नहीं चाहिए कपड़े, मिठाई। बल्लू को वापस लाओ। देखो सलोनी कितना रो रही है?" पर माँ ने नहीं सुना। रानी ने प्लेट पटकी झन् ....। बल्लू को वापस लाओ। पर माँ ने अब भी नहीं सुना। सलोनी रोती रही में...... में.......। तब तक उसका दोस्त टर्रम सिंह भी बल्लू को ढूँढता हुआ दरवाजे तक आ गया। वह अपनी बोली में बोला टर्र - टर्र टो - टो बल्लू को जल्दी वापस लाओ।

दादी बोली "हट - हट" टर्रम सिंह बोला टर्र - टर्र। सलोनी ने दादी का पल्लू मुँह में दबा लिया। उसकी आँखें छलक पड़ी। रानी धम - धम पैर पटक कर बोला कि मुझे बल्लू अभी वापस लाकर दो। दादी भी पल्लू छुड़ाकर निकल गयी। रानी भी अब सलोनी के साथ रो पड़ी। तभी बाहर से पापा के साईकिल की घण्टी सुनाई दी। रानी दौड़ी बापू - बापू बल्लू को अभी लाकर दो। बापू हँसे और झोले में से बर्फी निकालकर देने लगे। रानी अचानक उनसे लिपट गई और बोली "कोई मुझे आपसे दूर कर दे और बहुत सी मिठाई और कपड़े आपको लाकर दे, दे तो क्या तुम मुझे मिठाई के बदले उसे बेच दोगे? बापू कुछ ना बोल सके। उन्होंने झोला रखकर रानी को गोदी में उठाकर सीने से लगा दिया। माँ की आँखे भी भर आयीं और बापू भी रो पड़े। तुरंत रानी से बोले चलो अभी बल्लू को वापस लाने चलें। "सच में बापू?" रानी चहक उठी। "हाँ बिटिया, जल्दी चल।

मैं अभी बल्लू को वापस लेकर आता हूँ। और उसकी माँ से कभी दूर नहीं करूँगा।" तभी रानी जल्दी सलोनी के पास गयी और उसके गले से लिपट गयी। बापू से बोली, "आप कितने अच्छे हो बापू!" फिर वे दोनों साईकिल से चाचा के घर गए। वे लोग सबको रास्ते से हटाते हुए जल्दी पहुँचने का प्रयास करते रहे रानी जल्दी करो, जल्दी करो।" चिल्ला रही थी। बापू ने चाचा के रूपये वापस कर दिए और बल्लू को वापस ले लिया। बल्लू लपक कर रानी की गोद में चढ़ गया। उसके गले की घण्टी बोली "रुन, झुन, रुन, झुन। रानी हँसी, बापू हँसे, चाचा हँसे और बल्लू खुश होकर बोला "मैं .....मै....... मैं.......।" बापू ने जेब से एक टॉफी निकाल कर रानी को दे दी एक बल्लू को। अब रानी को टॉफी मीठी लग रही थी। वह बल्लू को सीने से लगा कर बोली," चल घर तेरी माँ तेरा इन्तजार कर रही है।"

कुहू बनर्जी,

(प्रधानाध्यापिका),

प्राथमिक विद्यालय अठकोहना,

विकास खण्ड- नकहा,

जनपद- लखीमपुर खीरी।

खेल

भारत के पारम्परिक खेल

शिक्षण संवाद

आज गली मोहल्ले में बच्चे नहीं दिखते जो बचपन को पल में याद दिला देते हैं। जिन खेलों में हिन्दुस्तान की मिट्टी की खुशबू बसती थी, आज की पीढ़ी का बच्चा उनसे अनभिज्ञ है। आज मन हुआ क्यों न अपने देश की संस्कृति के प्रति अपनी आज की पीढ़ी को सचेत किया जाए। प्राचीन भारतीय खेल जैसे गुल्ली डंडा, कंचे, लंगडी टाँग, पिट्ठू, जलेबी रेस, रस्साकसी, अंत्याक्षरी, पोसंपा आज के आधुनिक युग में मोबाइल और कम्प्यूटर पर खेले जाने वाले खेलों से पिछड़ गये हैं। अब गलियों में खेलता हुआ बचपन जो गली मोहल्लों की रौनक होता था वह पूर्णरूप से नदारद है। पारम्परिक खेल मात्र बच्चों के लिए न होकर पूरे परिवार के लिए होते थे जिनसे सामाजिक और सांस्कृतिक और भावनात्मक विकास होता था।

कुछ पारम्परिक खेलों की जानकारी इस प्रकार है :-

1. कंचा

उस समय का ये उत्तर भारत का बड़ा ही प्रसिद्ध खेल है। इसमें मार्बल या काँच की गोलियाँ होती थीं। इसमें बारी-बारी एक गोली से दूसरी गोली पर निशाना लगाना होता था, निशाना सही लगने पर वह गोली उसी बच्चे को मिल जाती। इस प्रकार कंचों को लेकर गलियों में बच्चों के झगड़े भी अकसर देखने को मिल जाते थे।

2. गिल्ली-डण्डा

ग्रामीण क्षेत्रों में यह खेल नंबर एक था। इसमें दो बेलनाकार लकड़ियाँ होती हैं। एक लकड़ी बेसबॉल या क्रिकेट के बैट के आकार की होती है और दूसरी काफी छोटी जिसे गिल्ली कहते हैं। जब खिलाड़ी डंडे से गिल्ली को हवा में उछालकर फेंकता। अगर दूसरा खिलाड़ी कैच कर लेता तो आउट वरना जहाँ गिल्ली गिरती, वहाँ से पहला खिलाड़ी फिर गिल्ली को हवा में उछालता था।

3. पोषम पा

पहले विद्यालयों में पोषम पा बहुत खेला जाता था। दो बच्चे हाथों को जोड़कर चैन बना लेते थे और गाते पोषम पा भई पोषम पा, लाल किले में क्या हुआ? सौ रूपये की घड़ी चुरायी, अब तो जेल में जाना पड़ेगा, जेल की रोटी खानी पडेगी और तभी चैन को बन्द कर लेते थे। जो बच्चे चैन के अन्दर रह जाते वे आउट हो जाते थे।

4. पिट्ठू या सेवन स्टोन्स

यह खेल इतना रोमांचक था कि बच्चे गर्मियों में भरी दुपहरी में भी सोते नहीं थे। इस खेल में एक ईंट के ऊपर सात पत्थर के टुकड़े रखे जाते जिन्हें एक बॉल से निशाना लगाकर गिराया जाता। गिरने पर इन सभी पत्थरों को पुनः इसी क्रम में लगाया जाता। फिर बॉल को दूसरी टीम का सदस्य, पत्थर पुनः रखने वाले खिलाड़ी को मारता बॉल लगने पर वह खिलाड़ी आउट हो जाता।

5. लट्टू

इस खेल में लकड़ी का एक गोला होता था जिसमें नीचे की ओर एक कील होती थी तथा एक सूत्र इसके चारों ओर लपेटकर जमीन पर घुमाया जाता था। इस खेल को कई प्रकार से खेला जाता था जैसे दूसरे लट्टू से टक्कर लगवाकर। आज यह खेल पूरी तरह से खत्म हो गया है।

इसी प्रकार लम्बी टाँग, अंत्याक्षरी, चौपड़ आदि खेल खत्म होने की कगार पर हैं। गाँव हो या शहर इन खेलों के माध्यम से विभिन्न परिवारों के बच्चों का एक साथ मिलजुल कर खेलना उनका सामाजिक, मानसिक व भावनात्मक विकास होता था।

आजकल के बच्चों में मोबाइल फोन और लैपटॉप के कारण शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास सही प्रकार नहीं हो रहा है बहुत ही कम आयु में भाँति-भाँति के विकार उत्पन्न हो रहे हैं। आउटडोर गेम्स के नाम पर केवल क्रिकेट, बैडमिंटन या फुटबॉल ही रह गये हैं और इनडोर मात्र मोबाइल गेम्स

तक सीमित रह गया है। एक बार बच्चों के साथ बैठकर उन्हें इन खेलों की जानकारी दें। खाली समय में अपने बच्चों के साथ इन खेलों को खेलकर अपना बचपन फिर से जिएँ व अपने देश की संस्कृति को सहेजकर रखें। अगली पीढ़ी को इस काबिल बनायें कि वे देश की संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत के रूप में सहेज कर रखें व अपने जीवन में हिंदुस्तान की मिट्टी को विशेष स्थान दें।

आधुनिकीकरण का मतलब यह कतई नहीं कि अपने देश की परम्परा को भुला दिया जाए। बचपन आजकल शारीरिक और मानसिक विकारों से जूझ रहा है। इसे सुन्दर बनाया जा सकता है यदि बच्चों को मोबाइल फोन, टी. वी., कम्प्यूटर आदि का सीमित प्रयोग सिखाएँ व प्राचीन खेलों के साथ साथ अन्य खेलों से भी जोड़ा जाए।

सुमन शर्मा,

(सहायक अध्यापक)

उच्च प्राथमिक विद्यालय गढ़ी माली,

विकास खण्ड- छाता,

जनपद- मथुरा

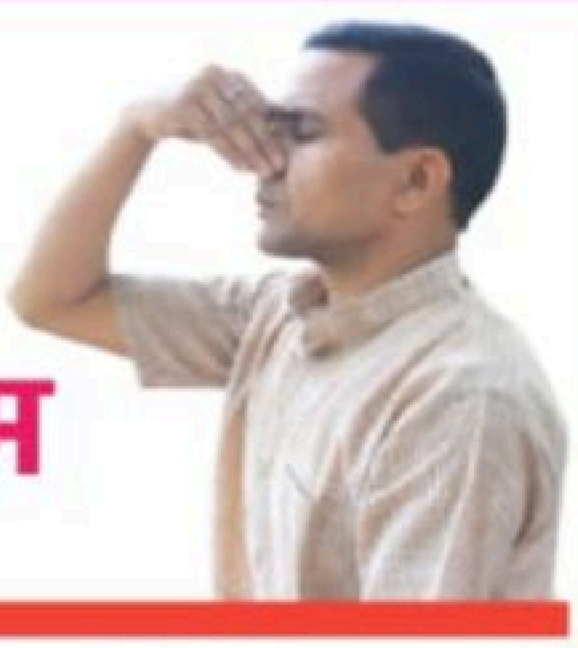

योग प्राणायाम : अनुलोम-विलोम

शिक्षण संवाद

"प्राणास्य आयाम: इति प्राणायाम" अर्थात प्राण का विस्तार ही प्राणायाम है अष्टांग योग के चौथे स्तंभ प्राणायाम का एक विशेष स्थान और महत्व है, अलग-अलग योगाचार्य ने इसे विभिन्न तरीकों से परिभाषित करते हुए लगभग एक जैसे ही प्रकार के अर्थ व्यक्त किए हैं।

प्राणायाम दो शब्दों से मिलकर बना है- प्राण +आयाम। प्राण का अर्थ है जीवन शक्ति। प्राण एक ऐसी ऊर्जा है जो किसी न किसी स्तर पर सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है प्राण ऊर्जा सभी जीवो में सूक्ष्म और सशक्त रूप से पायी जाती है। प्राण में निहित है ऊर्जा, ओज, तेज, वीर्य (शक्ति) और जीवनदायिनी शक्ति। वहीं आयाम का अर्थ है विस्तार, फैलाव, विनियमन, अवरोध या नियंत्रण। अतः प्राणायाम का अर्थ हुआ प्राण अर्थात श्वसन (जीवन शक्ति) का विस्तार, दीर्घीकरण और फिर उसका नियंत्रण।

हमारे योग ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के प्राणायामों का वर्णन किया गया है जिनमें से एक प्रमुख एवं विशेष लाभकारी प्राणायाम का वर्णन यहाँ कर रहे हैं जिसका नाम है अनुलोम-विलोम प्राणायाम।

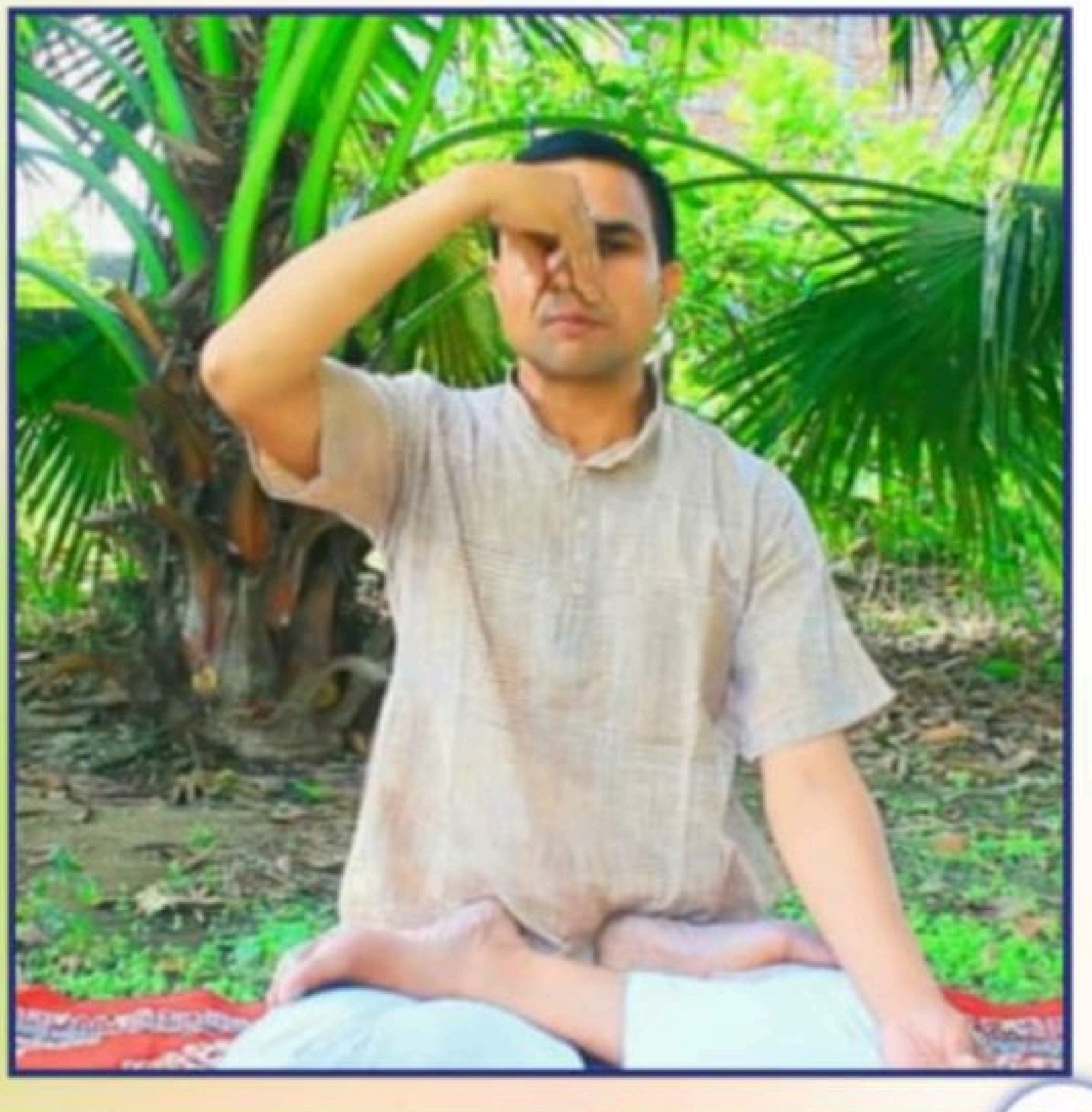

विधि :- अनुलोम-विलोम प्राणायाम का अर्थ होता है श्वास का लेना एवं छोड़ना। अनुलोम-विलोम प्राणायाम करने के लिए सर्वप्रथम किसी ध्यानात्मक आसन जैसे कि पद्मासन, सिद्धासन, सुखासन या वज्रासन में बैठ जाएँ। यदि किसी व्यक्ति को इन आसनों में या नीचे बैठने में परेशानी हो तो स्टूल, कुर्सी या बेड पर बैठ कर भी कर सकते हैं।

बाएँ हाथ के अँगूठे तथा तर्जनी के अग्र भाग को मिलाकर रखें तथा शेष उँगलियाँ सीधी रखें। यह ध्यान मुद्रा या ज्ञान मुद्रा कहलाती है इसे बाएँ घुटने पर रखें। दाएँ हाथ की तर्जनी को अँगूठे के मूल में रखेंगे यह वायु मुद्रा कहलाती हैं नाक के दो स्वर होते हैं दायाँ स्वर या सूर्य द्वार, बायाँ स्वर या चंद्र द्वार। सर्वप्रथम दाएँ हाथ के अँगूठे से नाक के दाएँ स्वर को बंद करते हैं तथा बाएँ स्वर से गहरा श्वांस अंदर लेते हैं। इसके पश्चात नाक के बाएँ स्वर को बंद करें तथा दाएँ स्वर से पूरा गहरा श्वांस बाहर छोड़ते हैं। अब दाएँ स्वर से गहरा श्वांस अंदर खींचते हैं तथा दाएँ स्वर को बंद करके बाएँ स्वर से पूरा गहरा श्वांस बाहर छोड़ देते हैं। पुनः बाएँ स्वर से गहरा श्वांस अंदर भरते हैं तथा नाक के बाएँ स्वर को बंद करके दाएँ स्वर से पूरा गहरा श्वांस बाहर छोड़ देते हैं। यही क्रम लगातार चलता रहेगा। इसमें ध्यान यह रखना है कि नाक के जिस स्वर से आपने श्वांस छोड़ा है अर्थात रेचक किया है उसी स्वर से श्वांस लेना है अर्थात पूरक क्रिया करनी है। श्वांस जितना गहरा होगा प्राणायाम का लाभ उतना ही ज्यादा होगा। इसकी प्रारंभ में 11 से 21 बार आवर्ती करें। इसके पश्चात धीरे-धीरे आवृत्ति बढ़ाते जाएँ। इसे आप 5 मिनट से लेकर 15 मिनट तक कर सकते हैं।

लाभ

1. यह मस्तिष्क को चुस्त ,क्रियात्मक और संवेदनशील बनाता है।
2. मन शांत एवं चित्त प्रसन्न रहता है।
3. सिर दर्द, माइग्रेन एवं साइनस में विशेष लाभकारी है।
4. एकाग्रता बढ़ाने में अत्यंत सहायक है।
5. ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में सहायक है।
6. कफ संबंधी रोग खाँसी, नजला, जुकाम, अस्थमा में अत्यंत लाभकारी है।
7. चर्म रोगों को दूर करने में बहुत उपयोगी है।
8. सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोगों को दूर करता है।

कुलदीप कुमार (सहायक अध्यापक)

उच्च प्राथमिक विद्यालय इग्राह कंपोजिट,

विकास क्षेत्र-डिलारी, जनपद- मुरादाबाद

'सरल एप्प'

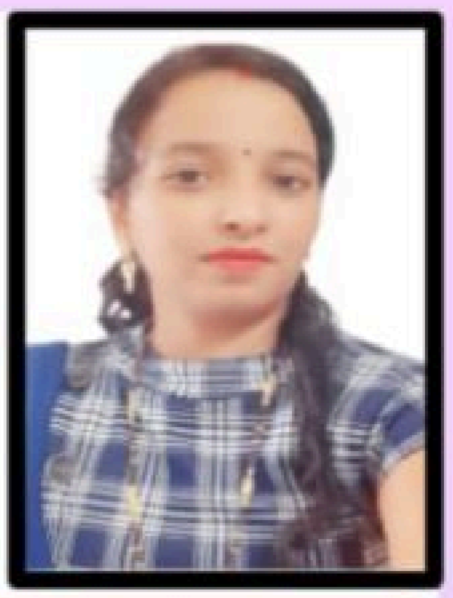

शिक्षण संवाद

शैक्षिक स्तर को बढ़ाने एवं सुधार हेतु बहुत सी शैक्षिक तकनीकी का निर्माण किया जाता है तथा उन्हें शामिल भी करते हैं। शैक्षिक तकनीकी क्षेत्र में विभिन्न एप्प भी बनाए गए हैं। इन एप्प की सहायता से तकनीकी रूप से शिक्षा के स्तर को सुधारने और शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने में मदद मिलती है।

'सरल एप्प' शैक्षिक तकनीकी का एक एप्प है जिसे बेसिक शिक्षा परिषद् ने लॉन्च किया है। परिषदीय स्कूलों में बच्चों के शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन 'सरल एप्प' के द्वारा किया जाएगा। बेसिक शिक्षा विभाग परिषदीय स्कूलों में बच्चों की शैक्षिक दक्षता का आकलन हर तीन महीने पर परीक्षा के माध्यम से कराया जाता था। परीक्षा के बाद बच्चों की कापियाँ इकट्ठा करके ब्लॉक संसाधन केंद्र पर भेजी जाती थीं। फिर वहीं उनका मूल्यांकन होता था। मूल्यांकन के बाद बच्चों की रिजल्ट की डाटा फीडिंग होती थी। इन परीक्षाओं के आयोजन में काफी समय लगता था, लेकिन अब 'सरल एप्प' के द्वारा इस काम को बहुत आसानी से किया जा सकता है।

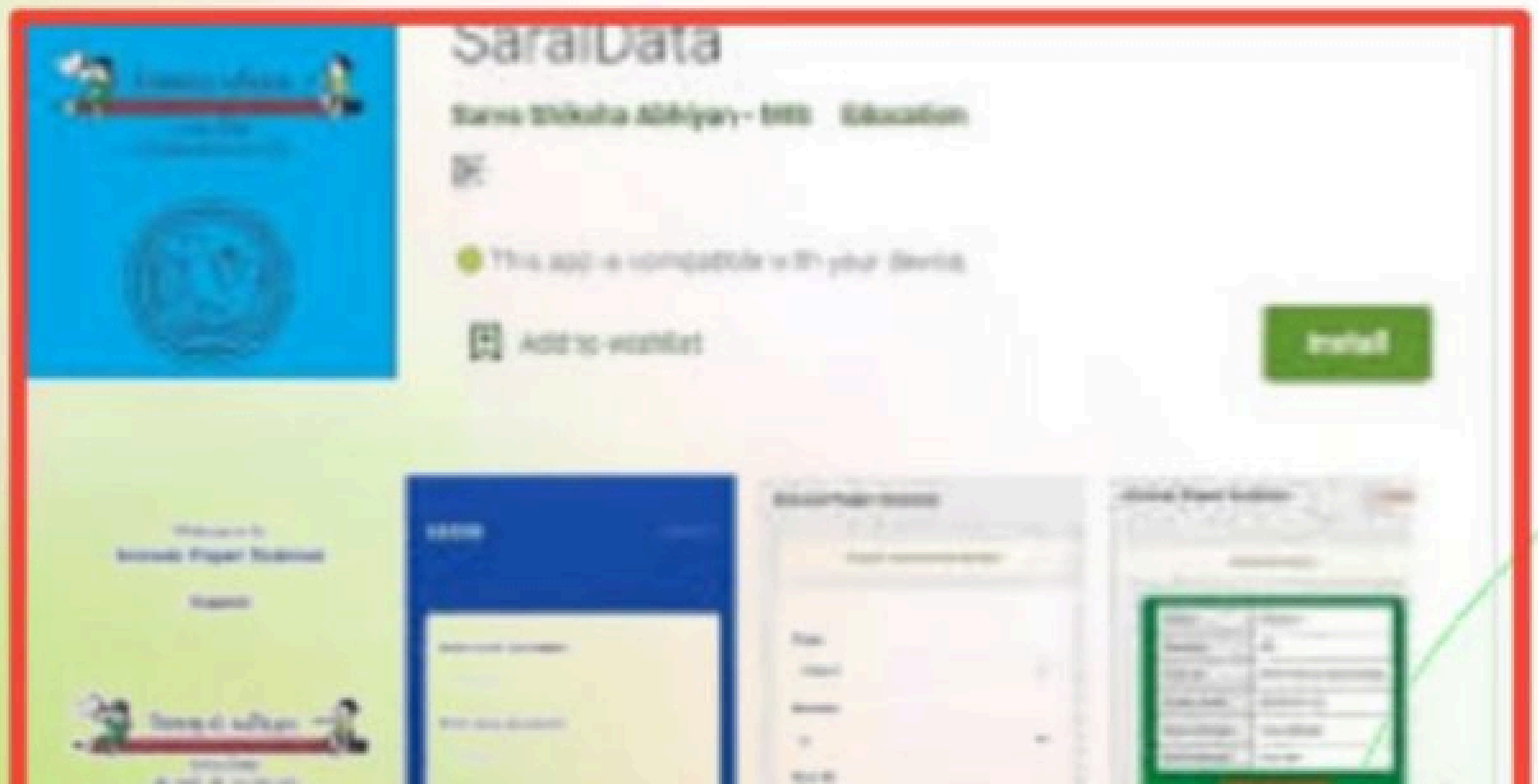

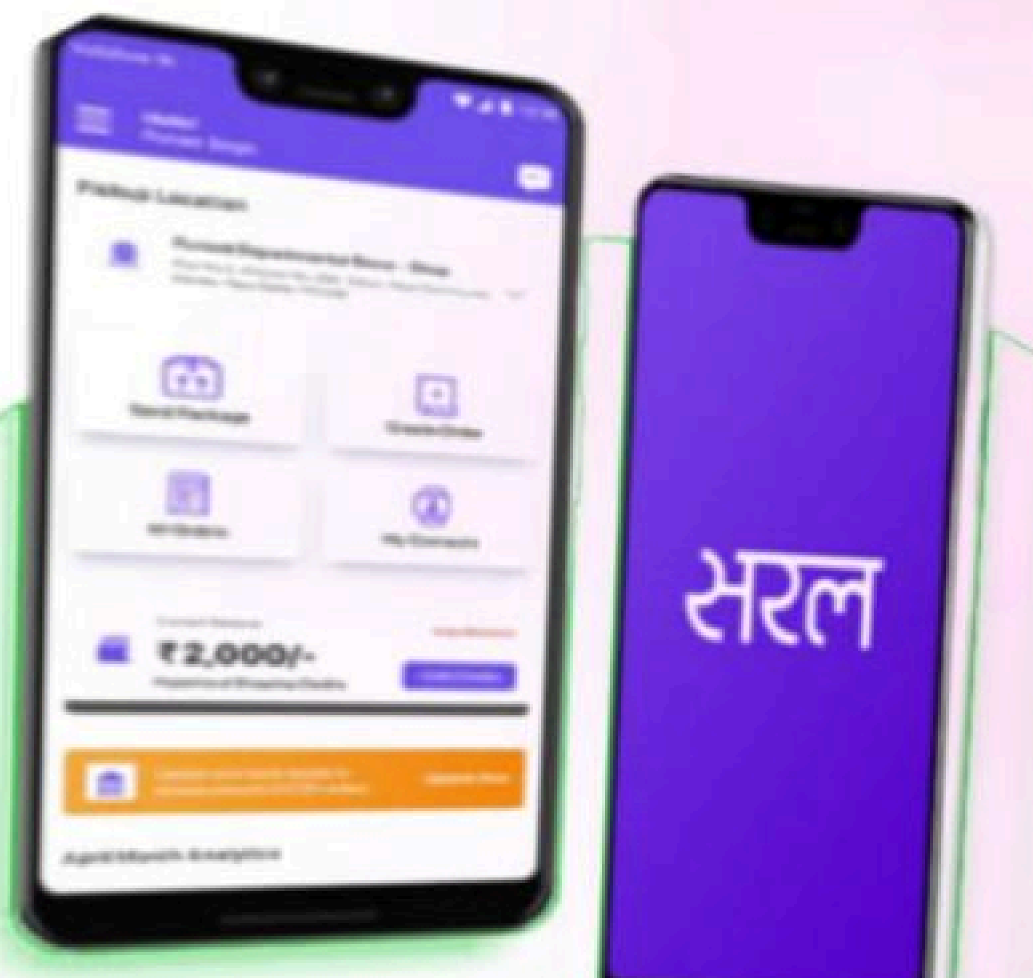

बच्चों के सीखने और समझने के स्तर का मूल्यांकन अब सैट(स्टूडेण्ट एसेसमेन्ट टेस्ट) के जरिए हर महीने में किया जा सकेगा। बेसिक शिक्षा विभाग इसकी योजना बना रहा है। इस काम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में आधारित 'सरल मोबाइल एप्प' का उपयोग किया जाएगा। SAT परीक्षा वर्ष में तीन बार होगी, इसे बहुविकल्पीय प्रश्नों के साथ ओएमआर शीट पर लिया जाएगा। परीक्षा के दो घण्टे बाद शिक्षक मार्कशीट की फोटो खींचकर सरल एप्प पर अपलोड करेंगे और एआई की मदद से मिनटों में इसका रिजल्ट आ जायेगा। सरल एप्प के द्वारा यह रिजल्ट स्कूलवार, ब्लॉकवार से लेकर राज्यवार एक क्लिक पर आसानी से देखा जा सकता है। अभी तक SAT की ओएमआर शीट ब्लॉक स्तर पर शिक्षक ही जाँचते थे।

बच्चों की सीखने की क्षमता के त्वरित मूल्यांकन के लिए शासन ने सरल एप्प को लॉन्च किया है। कोरोना के हालात सामान्य होते ही बच्चों का इस विधि से मूल्यांकन शुरू हो जाएगा। सरल एप्प के माध्यम से ऑनलाइन पढ़ाई की भी मॉनिटरिंग की जाएगी। स्कूलों में आने वाले ए. आर. पी. और एस. आर. जी. भी सरल एप्प के माध्यम से बच्चों की पढ़ाई का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इसे जाँचने के बाद इसके नम्बर सीट पर चढ़ा कर भेजते थे और फिर रिजल्ट तैयार होता था। इस रिजल्ट को तैयार करने में बहुत समय लग जाता था। पर 'सरल एप्प' के द्वारा कुछ ही मिनटों में बच्चों की परीक्षा का परिणाम तुरन्त आ जाएगा। सरल एप्प की नई व्यवस्था के तहत हर महीने परीक्षा का आयोजन ओएमआर शीट के माध्यम से होगा। परीक्षा के बाद तुरन्त ही बच्चों की शैक्षिक दक्षता का परिणाम जारी हो जाएगा। सरल एप्प के प्रयोग से निम्न लाभ है-

1- बच्चों के शैक्षिक स्तर का बहुत कम समय में आंकलन कर सकते हैं।
2- संसाधन की बचत होगी।
3- बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता जाँचने में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होगा।

इस प्रकार से 'सरल मोबाइल एप्प' एक शैक्षिक तकनीकी एप्प है जो बच्चों के सीखने और समझने के स्तर का मूल्यांकन तकनीकी माध्यम से कम समय में कर सकता है।

अनुप्रिया यादव,
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय काजीखेड़ा,
विकास खण्ड-खजुहा,
जनपद-फतेहपुर।

डॉ0 राम मनोहर लोहिया

शिक्षण संवाद

देश की राजनीति में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और स्वतंत्रता के पश्चात ऐसे कई नेता हुए जिन्होंने अपने दम पर शासन का रूप बदल दिया। उनका मानना था "जिन्दा कौमें सरकार बदलने के लिये पाँच साल तक इंतजार नहीं करती।" जिनकी कथनी और करनी में कोई अंतर न था। जी हाँ आज मैं बात कर रहा हूँ, समाज को आइना दिखाने वाले ऐसे महान क्रांतिकारी और नेता की जो अपनी प्रखर देशभक्ति और तेजस्वी समाजवादी विचारों के कारण अपने समर्थकों के साथ-साथ अपने विरोधियों से भी अपार सम्मान पाते थे क्योंकि वह ऐसे पहले नेता थे जो अपनी ही पार्टी की गलत नीतियों का विरोध करते थे। उन्होंने सुविधापूर्वक जिंदगी जीने के स्थान पर जंग-ए-आजादी के लिये अपनी जिंदगी समर्पित कर दी।

उन्होंने देश की आजादी के लिये भारत छोड़ो आंदोलन, गोवा मुक्ति आन्दोलन, अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन व ऐसे ही कई अन्य आन्दोलनों में भाग लिया और जेल भी गये। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने की उनकी बचपन से ही प्रबल इच्छा थी जो बड़े होकर पूर्ण हुई। सन् 1940 में "सत्याग्रह नाउ" नामक लेख लिखने के आरोप में उन्हें दूसरी बार दो वर्षों के लिये कारावास भेज दिया गया। इसके बाद उनका कारावास आना और जाना लगा ही रहा। कारावास उनका घर बन चुका था।

देश की आजादी के बाद वह राष्ट्र के पुनर्निर्माण और समाज को जागरूक करने में लग गये।उन्होंने हमेशा हिंदी भाषा को प्राथमिकता दी क्योंकि उनका मानना था कि अंग्रेजी शिक्षित और अशिक्षित जनता के बीच दूरी पैदा करती है। वह ठेठ देसी चिंतक और समाजवादी थे क्योंकि उनका मानना था समाज ही उनका कार्यक्षेत्र है। वह अपने कार्यक्षेत्र को जन मंगल की अनुभूति से महकाना चाहते थे। वह चाहते थे कि व्यक्ति-व्यक्ति के बीच कोई भेद-भाव की दीवार न हो। सब जन समान हों, सब जन का मंगल हो। वह जाति प्रथा का खुलकर विरोध करते थे। वह चाहते थे कि नर और नारी को समानता का अधिकार मिले। चमड़ी के रंग पर राजनीति ना हो, इसलिए वह चाहते थे कि उच्च और निम्न जातियों के बीच रोटी और बेटी का संबंध हो। तभी हम जात पात और छुआ-छूत जैसी बीमारी से निजात पा सकते है। समाज और समाजवादी सपनों के साथ महान क्रांतिकारी ने 12 अक्टूबर 1967 को 57 वर्ष की आयु में अंतिम साँस ली। जी हाँ आप लोगों ने सही समझा मैं बात कर रहा था स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी डॉ0 राम मनोहर लोहिया जी की जिनका जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के अयोध्या जनपद (वर्तमान अम्बेडकर नगर) के अकबरपुर नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता श्री हीरालाल और माता श्रीमती चंदा देवी दोनो ही पेशे से शिक्षक थे। लोहिया जी के पिता जी हृदय से सच्चे राष्ट्रभक्त और गांधी जी के अनुयायी थे। लोहिया जी जब ढाई वर्ष के थे तभी उनके सिर से माँ की ममता का साया उठ गया। चंदा देवी के देहांत के उपरांत लोहिया जी का पालन पोषण उनकी दादी जी और सरयूदेई (परिवार की नाइन) द्वारा किया गया। ऐसी महान सोच समाज के प्रति रखने वाले लोहिया जी शत शत नमन है।

राजीव कुमार सिंह,

सहायक अध्यापक,

कम्पोजिट विद्यालय अखरी,

विकास खण्ड- हथगाम,

जनपद-फतेहपुर।

लर्निंग कॉर्नर (बच्चों का सुगमकर्ता)

शिक्षण संवाद

नवाचार अर्थात नया विधान का अर्थ है "किसी उत्पाद प्रक्रिया या सेवा में थोड़ा या कुछ बड़ा परिवर्तन लाने से है। नवाचार के अंतर्गत कुछ नया और उपयोगी अपनाया जाता है जैसे कोई नई विधा या नई तकनीक। प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते हैं। इन्हीं सबसे नवचेतना और उत्सुकता का सन्चार होता है परिवर्तन और नवाचार एक दूसरे के पारस्पारिक पूरक हैं। नवाचार कोई नया कार्य करना मात्र ही नहीं है वरन किसी कार्य को नए तरीके से करना भी नवाचार है। शिक्षा में भी परिवर्तन या नवाचार करना जरूरी है। वर्तमान परिदृश्य में जब कोविड महामारी ने जब पूरे विश्व् को जकड़ रखा है और चारों ओर त्राहि - त्राहि मची है, सब कुछ अस्त व्यस्त हो गया है ऐसे में हमारी शिक्षा व्यवस्था पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ा।

सुरक्षा और स्वास्थ्य की दृष्टि से पिछले कुछ समय से शिक्षक बच्चों से दूर हैं। पर क्या ऐसे में हमारे नन्हें बच्चों को शिक्षा का अधिकार दिलाना और उनका बौद्धिक विकास करना हम शिक्षकों का परम दायित्व नहीं है? निश्चित रूप से आप सभी का उत्तर हाँ ही होगा। बहुत से शिक्षकों ने उसके लिए भरसक प्रयास किये हैं। विभाग द्वारा भी ऑनलाइन शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है और बहुत से प्रयास किये जा रहे हैं। पर जो सबसे बड़ी समस्या हमारे सामने आई है कि वंचित वर्ग के अधिकतर अभिभावकों के पास एंड्राइड फोन तो दूर साधारण मोबाइल फोन भी नहीं हैं और अगर हैं भी तो उसमें रीचार्ज कराने में वह असमर्थ है। ऐसे में हम विभाग की ऑनलाइन सामग्री बच्चों तक कैसे पहुँचाएँ जिससे उनके शारीरिक स्वास्थ्य को भी कोई क्षति ना हो और बच्चों को शिक्षा से जोड़ कर अपेक्षित दक्षताओं

को उन्हें प्राप्त कराया जा सके। इसके लिए मेरे द्वारा एक छोटा सा प्रयास किया गया। गाँव में एक प्रेरक समिति बनाई गई और समिति के सभी सदस्यों के सहयोग और उनकी ही निगरानी में गाँव में श्री अभिनव सिंह और श्री राजबहादुर सिंह के घर की बाहरी दीवारों पर लर्निंग कॉर्नर बनाया गया। यहाँ हर सप्ताह शिक्षकों द्वारा विभाग से प्राप्त और शिक्षकों द्वारा बनाए गए कार्य पत्रक चिपका दिए जाते हैं। बच्चे वहाँ आकर अपना काम लिखकर करते हैं और बाद में प्रेरक समिति के सदस्यों द्वारा उनके कार्य को चेक किया जाता है। इस नवाचार से उन बच्चों को लाभ हुआ जिनके पास फोन या किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं है।

इस नवाचार से न केवल परिषदीय बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं बल्कि गाँव व क्षेत्र के सभी विद्यालयों के बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं। इस प्रकार न्यूनतम लागत पर अधिकतम बच्चे इस लर्निंग कॉर्नर से लाभान्वित हो रहे हैं।

अर्चना अरोरा,

सहायक अध्यापक,

कम्पोजिट विद्यालय बरेठर खुर्द,

विकास खण्ड - खजुहा,

जनपद - फ़तेहपुर।

गतिविधि

दिमागी कसरत

शिक्षण संवाद

नमस्कार साथियों, आज मैं एक आप सबको एक बेहतरीन गतिविधि के बारे में बताने जा रही हूँ, किन्तु उससे पहले सवाल उठता है कि गतिविधि क्या है? इसके प्रत्युत्तर में कहा जा सकता है कि गतिविधि वह क्रिया है जो पाठ्यक्रम को रुचिकर बनाती है। यही गतिविधि का मूल अर्थ है। किसी भी कार्य को हम सरल, सुंदर, मन को भाने वाला करें जिससे चेहरे पर हँसी आ जाए ऐसा चित्रण, संवाद करना, उसे सुसज्जित तरीके से पेश करना ताकि सामने वाले को रोचक लगे और उसको कार्य करने के प्रति इच्छा बढ़ जाए, वह गतिविधि कहलाती है। जैसे- गीत, कहानी, कविता, खेल, नाटक आदि बच्चों के साथ मिलकर कराते हैं तो बड़ा ही मनोरंजक और सुंदर वातावरण हो जाता है, इसी को गतिविधि कहते हैं। आज मैं एक गतिविधि पेश करने जा रही हूँ जिसे मैंने अपने स्कूल के बच्चों के साथ विद्यालय में कराया है। बड़ा ही सुखद वातावरण यादों के झरोखों से आप सभी को अपने शब्दों में बताने जा रही हूँ।

गतिविधि क्रियान्वयन :-

A to Z अल्फाबेट बच्चों से लिखवाना खेल-खेल में। सबसे पहले बच्चों की दो टोली बना देंगे टीम A और टीम B, 5 बच्चे इधर 5 बच्चे उधर अब सभी को ब्लैक बोर्ड के पास ले जाएँगे और टीम के अनुसार उनको खड़ा कर देंगे। ब्लैक बोर्ड पर हेडिंग डालकर "दिमागी कसरत का खेल ए टू जेड तक", प्यारे बच्चों को खेल से परिचित कराते हैं। प्यारे बच्चों हमने

आपकी 2 टीम बनाई हैं जो टीम जीतेगी उसको इनाम मिलेगा आप सभी को ABCD आती है, बच्चे कहेंगे हाँ आती है। हम ब्लैक बोर्ड पर गोले बनाएँगे आप सभी को अपने हाथों में चॉक लेकर खड़ा होना है और यह देखना है कि ABCD (अल्फाबेट्स) का कौन सा अक्षर लिखे बिना रह गया। ध्यान से देखना है। जिसकी टीम जीतेगी वह फर्स्ट आएगा।

गतिविधि का उद्देश्य :-

इस गतिविधि से बच्चों का मनोबल और उत्साह बढ़ेगा और उनकी झिझक दूर होगी। साथ ही बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास तेजी से होने में मदद मिलेगी।

पुष्पा शर्मा (शिक्षामित्र),
प्राथमिक विद्यालय राजीपुर,
विकास खण्ड- अकराबाद,
जनपद- अलीगढ़।

शिक्षागीत

शिक्षा भी मिलेगी...

शिक्षण संवाद

शिक्षा भी मिलेगी, संस्कार भी मिलेंगे।
आगे बढ़ने के सारे, अधिकार भी मिलेंगे।
डरने की क्या बात है, सरकार अपने साथ है।
पुस्तक भी मिलेगी, पोषाहार भी मिलेगा।
प्यार भरा दोस्ताना, व्यवहार भी मिलेगा।
शिक्षानीति खुशियों की सौगात है....सरकार....
खाना भी मिलेगा, किराया भी मिलेगा।
गुरुओं से आशीर्वाद का साया भी मिलेगा।
गुरु शिष्यों की ये मुलाक़ात है...सरकार....
स्कूटी भी मिलेगी, साइकिल भी मिलेगी।
हर बच्चे को अपनी मंज़िल भी मिलेगी।
चलते रहें हम, क्या दिन क्या रात है...सरकार....
प्यार भी मिलेगा, पुरस्कार भी मिलेगा।
खुशियों का सारा, संसार भी मिलेगा।
भीगो, नहाओ ज्ञान की बरसात है...सरकार....

उपवन भी मिलेगा और झूले भी मिलेंगे।
शैक्षिक भ्रमण भी होगा, विज्ञान मेले भी मिलेंगे।
हिन्दुस्तानी हैं हम एक धर्म एक जात है...सरकार.....
सवाल भी मिलेंगे, जवाब भी मिलेंगे।
ज़िंदगी के सारे हिसाब भी मिलेंगे।
हौसलों के आगे झुकती कायनात है....सरकार....
विवेकानन्द भी मिलेगा, कलाम भी मिलेगा।
राम-राम भी मिलेगा, सलाम भी मिलेगा।
झुमों नाचो गाओ ये ज्ञान की बरसात है...सरकार....
काशी भी मिलेगी, कैलाश भी मिलेंगे।
तर्क भी मिलेंगे, एहसास भी मिलेंगे।
देश में आयी एक नई प्रभात है...सरकार...
मुट्ठी भर भी मिलेगा, सारा जहान भी मिलेगा।
वैश्विक मंच पर खड़ा, हिन्दुस्तान भी मिलेगा।
नयी शिक्षा नीति, वाह-वाह क्या बात है...सरकार...

राजेश जानकी जाँगिड़,
वरिष्ठ अध्यापक-हिन्दी,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जैसलमेर,
विकास खण्ड-श्री डूँगरगढ़,
जनपद-बीकानेर,
राजस्थान

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्टः https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू–टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

मिशन शिक्षण संवाद